ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

परोपकारिणी

वर्ष - ५६ अंक - २० महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अक्टूम्बर (द्वितीय) २०१४

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

जोधपुर नरेश यशवन्त सिंह नन्ही जान वेश्या के साथ एवं नरेश को महर्षि की फटकार

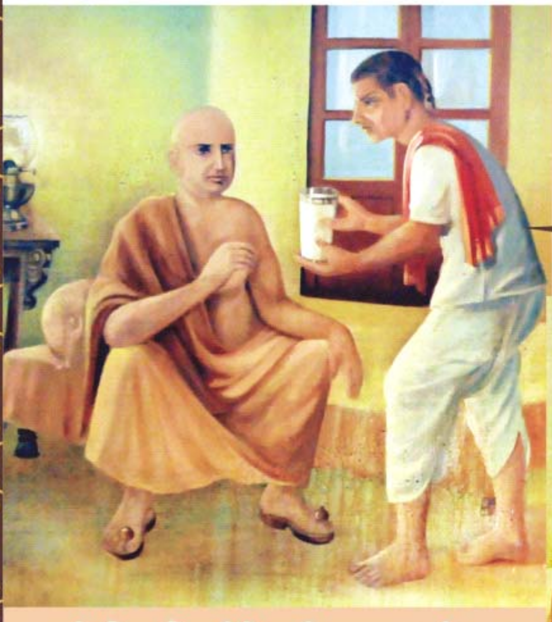

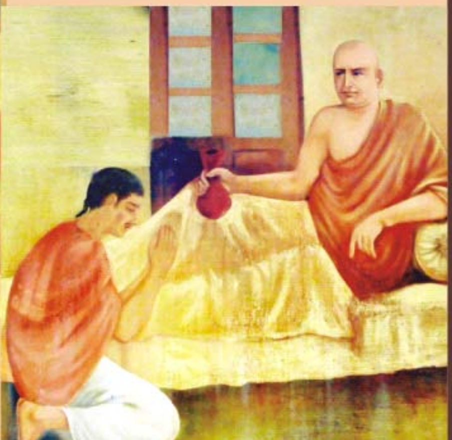

अपने लिए विष देने वाले पाचक को धन देकर भागने की सलाह देते हुए महर्षि

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ **अंक** : २०
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: कार्तिक कृष्ण, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक–परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक–श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

–परोपकारी का शुल्क–

भारत में

वार्षिक–२०० रु., **द्विवार्षिक**–३९० रु., **त्रिवार्षिक**–५८० रु., **आजीवन**–(=१५ वर्ष)–२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक–५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**–९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**–१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**–(=१५ वर्ष)–५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

अक्टूबर द्वितीय २०१४

अनुक्रम

१. मोदी की गीता	सम्पादकीय	०४
२. कृतकृत्य किसे कहते हैं?	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१२
४. पुस्तक-समीक्षा	देवमुनि	१५
५. स्वाध्यायान्मा प्रमद:	ब्र. राजेन्द्रार्य:	१९
६. यहाँ के बाबाओं के नाम	मोहन लाल तंवर	२२
७. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२४
८. स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं लाला लाजपतराय से सम्बन्धित		२६
९. १३१ वाँ ऋषि बलिदान समारोह कार्यक्रम		२७
१०. दीपावली : अन्धकार से प्रकाश....	रामनिवास गुणग्राहक	२८
११. जिज्ञासा समाधान-७३	आचार्य सोमदेव	३२
१२. महर्षि पतञ्जलिकृत व्याकरण......	आचार्य सनत्कुमार	३६
१३. संस्था-समाचार		३९
१४. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

– उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं –
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

मोदी की गीता

प्रधानमन्त्री मोदी की इस बात पर कोई भी गीता के सन्देश से परिचित व्यक्ति गर्व कर सकता है। गीता को आज हिन्दू जगत् में धर्मग्रन्थ का स्थान प्राप्त है। गीता के सन्देश को प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी माना गया है। अत: गीता की पुस्तक प्रधानमन्त्री मोदी ने अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा को भेंट की। भारत की ओर से अमेरिका और पूरे विश्व को यह एक अच्छा सन्देश है। सम्भवत: मोदी गीता के सन्देश को इसीलिए ओबामा तक पहुँचाना चाहते हैं जिससे पता लगे कि भारत अपनी पूर्व निराशा को तजकर कार्य करने के लिए सन्नद्ध हो गया है। गीता की प्रति का अनुवाद महात्मा गाँधी का किया हुआ है जो कांग्रेस परम्परा में तिलक के पश्चात् गीता को जीवन की समस्या का समाधान मानते हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि गीता पढ़कर भी गाँधी जी हिन्दुओं के साथ न्याय नहीं कर सके।

संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने बहुत स्पष्ट कहा था कि हिन्दू जिसकी पूजा करता है उसे आले में रख देता है या खूंटी पर टांग देता है फिर अपनी सारी समस्यायें उसको अर्पण करके निश्चिन्त हो जाता है। उनका विचार था आप जिसको भगवान बना देते हैं उसे अपने लिए अनुकरणीय नहीं मानते, केवल पूजनीय मानते हैं। पूजा के बाद उपासक का कोई कार्य शेष नहीं रहता, बस प्रार्थना करता रहता है- भगवान यह कर दे, वह कर दे। एक बार मैं गीता वाचकों के समुदाय में गीता पर प्रवचन करने के लिए आमन्त्रित होकर गया। वहाँ मञ्च पर एक बड़ी सुन्दर माला रखी थी, मञ्च पर कोई अन्य व्यक्ति भी नहीं था अत: यह समझना सहज था कि इस सत्कार व पूजा का पात्र आज का प्रवचनकर्त्ता ही होगा। परन्तु उस समय भ्रम भञ्जन हो गया जब वह माला मेरे हाथ में देकर कहा गया कि यह माला आप गीता की पुस्तक को समर्पित करें। इन गीता पूजकों को गीता पढ़ते-पढ़ते इतनी भी समझ नहीं आई कि इस माला से पुस्तक का सत्कार कैसे सम्भव है। गीता की पुस्तक कागज है, उस पर गीले फूलों की माला रखने से पुस्तक तो खराब होगी ही, क्या यह पुस्तक का आदर है या अनादर है? मोदी गीता की ऐसी पूजा करने वालों में से नहीं है।

कोई मनुष्य गीता पढ़े और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने का उसके मन में विचार भी उत्पन्न न हो, ऐसे व्यक्ति का गीता पढ़ना व्यर्थ है, उसने अपने जीवन का समय व्यर्थ ही किया है। गीता की चर्चा छोड़कर जब आर्यसमाज का कोई व्यक्ति वेद की चर्चा करता है तो उसे कोई धर्मद्वेषी आ गया इस दृष्टि से देखा जाता है। एक सज्जन ने प्रश्न किया कि क्या उपनिषद् या वेद गीता से भी ऊँचे हैं? उस व्यक्ति ने गीता से बाहर कोई पुस्तक ही नहीं देखी होती। उस व्यक्ति को कहा- गीता के प्रारम्भ में गीता माहात्म्य का एक श्लोक पढ़ा जाता है, लगता है कभी उसके अर्थ पर आपने विचार ही नहीं किया, नहीं तो मोटी बुद्धि का व्यक्ति भी उसके आशय को समझ सकता। उस श्लोक में कहा गया है कि उपनिषद् गौवें हैं, श्रीकृष्ण गोपालक हैं, अर्जुन बछड़ा है तथा गीतामृत उसका दुग्ध है, इतने से ही समझ में आ जाता है कि गीता बाद की पुस्तक है और उपनिषद् पुरानी पुस्तकें हैं। मूल महत्त्वपूर्ण होता है या उसका व्याख्यान? अब गीता की पुस्तक पूजकर मुक्ति चाहने वालों को कौन समझाये कि उपनिषद् गीता से प्रथम और महत्त्वपूर्ण है।

उपनिषद् भी अन्तिम नहीं है। गीता और उपनिषद् में एक समानता है। जैसे गीता कोई स्वतन्त्र पुस्तक नहीं है उसी प्रकार उपनिषद् भी स्वतन्त्र पुस्तकें नहीं हैं। गीता महाभारत के कुछ अंश का नाम है। महाभारत में अनेक गीतायें पढ़ी गई हैं। मध्यकाल के लोगों ने इस कृष्णार्जुन संवाद को महत्त्वपूर्ण व जनोपयोगी मानकर पृथक् से प्रवचन करना प्रारम्भ कर दिया। जिस प्रकार आध्यात्मिक लोगों ने वेद और वैदिक साहित्य से आत्मा-परमात्मा के उपदेश को उपनिषद् नाम से प्रचारित कर दिया। आज २५० उपनिषद् का एक संग्रह तो पुस्तकालय में विद्यमान है। पुरातनता के आधार पर १० या ११ उपनिषद् हैं। जैसे उपनिषद् के ही नाम पर बहुत सारे विचार मिलते हैं वैसे ही गीता में ढेर सारी मिलावट समय-समय पर होती रही है जिसके कारण अनुचित बातों का भी गीता में समावेश है। गीता को धर्मग्रन्थ मानकर हिन्दू धर्म के ठेकेदार उसकी गलत बातों का भी बड़े गर्व से प्रचार करते हैं। मुझे स्मरण है कि विश्व हिन्दू परिषद् ने एक बार गीता के श्लोकों के पाठ की प्रतियोगिता का आयोजन सारे भारत के विद्यालयों में किया था। उसमें सबसे दु:खद पक्ष था कि गीता के

सिद्धान्त विरुद्ध अवतारवाद पोषक श्लोकों को स्मरण कराया गया। जबकि गीता में जीवनोपयोगी आदर्श वाक्यों की कमी नहीं है। परन्तु दिल अवतारवाद में जकड़ा हो तब अच्छी बातें किसे सूझती हैं।

इसी प्रकार कुरुक्षेत्र में गीता सम्मेलन प्रति वर्ष किया जाता है। गीता माहात्म्य की बड़ी चर्चा होती है परन्तु गीता की अनुचित टिप्पणियों का उल्लेख करते ही गीता प्रेमी भड़क उठते हैं। गीता में एक स्थान पर लिखा है कि स्त्री, वैश्य, शूद्र ये अन्त्य योनियाँ भी मुझे प्राप्त होके तर जाती हैं। जब हिन्दुओं से पूछा जाता है कि इस पंक्ति को गीता की मानकर क्या मान्य कर लेंगे और इन सब अनर्थ को मान लेंगे। वास्तव में यह मध्यकालीन ब्राह्मणवादी मानसिकता है जिसके लिए शंकर को बाध्य होना पड़ा और लिख दिया नारी नरक का द्वार है। इन प्रक्षेपों को हटाकर देखें तभी गीता का महत्त्व समझ में आता है। इसको समझने के लिए एक घटना का उल्लेख करना उचित होगा। जिन सज्जन की ये घटना है अब उनका स्वर्गवास हो चुका है परन्तु उक्त सज्जन ने अपने विचारों के समर्थन में एक बड़ी पुस्तक लिखी थी, उक्त पुस्तक मुझे उन्होंने भेंट भी की थी, मुझे व्यर्थ प्रतीत हुई तो उस पुस्तक को उनके कार्यालय में ही छोड़ दिया।

जैसा कि उन्होंने कहा कि दिल्ली जनसंघ के अध्यक्ष थे उत्तम प्रकाश बंसल। वे अपने अन्तिम समय में संन्यासी हो गये थे परन्तु उन्होंने अपना नाम परिवर्तित नहीं किया। जब एक प्रसंग में उनसे भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ तो उन्होंने अपने गीता-ज्ञान का प्रवचन हमें भी दिया। उनका मानना था कि गीता दुनिया की सबसे घटिया पुस्तक है, मैंने पूछा क्यों, तो उन्होंने उत्तर दिया इसमें चौबीस प्रश्न उठाये गये हैं परन्तु एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया है और भी बातें उन्होंने कहीं तथा अपने कथन की पुष्टि में उन्होंने तीन व्यक्तियों के नाम दिये जिसमें एक स्वर्गस्थ हो गये हैं तथा दो आज भी जीवित हैं। उन्होंने जो तीन नाम दिये थे वे सामान्य नहीं हैं, सब गीता के विद्वान् और प्रवचन कर्त्ता हैं। एक स्वामी करपात्री जी जिनका स्वर्गवास हो गया है तथा दूसरे पूर्व शंकराचार्य स्वामी सत्यमित्रानन्द तथा तीसरे डॉ. कर्णसिंह। बंसल जी का कहना था कि इन तीनों ने मेरे प्रश्नों का उत्तर तो नहीं दिया परन्तु कहा बंसल धार्मिक आस्था में सन्देह उत्पन्न नहीं करना चाहिए अत: आपका विचार अपने तक ही रहने दो।

उनसे चर्चा करते हुए मैंने निवेदन किया मैं आपके विचार से सहमत नहीं हूँ, उन्होंने कहा फिर तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर दे दो, मैं चौबीस प्रश्न तुम्हारे सामने रखता हूँ। मैंने उत्तर में उनसे निवेदन किया कि मैं आपके चौबीस प्रश्नों को बिना जाने ही आपका उत्तर दे सकता हूँ। उन्होंने कहा उत्तर दो। मेरा निवेदन था गीता में चौबीस नहीं एक ही प्रश्न है, उसका हल भी है। इस प्रकार एक प्रश्न और एक उत्तर का नाम गीता है। वह प्रश्न क्या है? वह प्रश्न है- **न योत्स्य।** मैं नहीं लड़ूँगा। अर्जुन कहता है चाहे तीनों लोकों का राज्य मिले या भीख माँगकर खाना पड़े, मैं नहीं लड़ूँगा। यह कहकर उसने अपना गाण्डीव धनुष नीचे रख दिया और चुप होकर बैठ गया।

इसके बाद जो कुछ है वे सम्भावित प्रश्न हैं और उनका उत्तर है। अगले दूसरे अध्याय में छ: सम्भावित परिस्थितियों की चर्चा है और प्रत्येक का समाधान है। यहाँ उनके वर्णन का यह अवकाश नहीं है। यदि गम्भीरता से देखा जाय तो गीता कुछ नहीं किसी भी संशयग्रस्त के मन में जो प्रश्न उठते हैं वे उठाये गये हैं उनका समाधान कर दिया गया है। श्रीकृष्ण पूरे महाभारत के ऐसे पात्र हैं जो परिणाम में विश्वास करते हैं प्रक्रिया में नहीं, सत्य तक पहुँचने की किसी भी बाधा का निराकरण करने में वे समर्थ हैं। गीता से बाहर जाकर भी एक प्रसंग का उल्लेख कर दिया जाये तो अनुचित नहीं होगा। जब कर्ण के रथ का पहिया भूमि में धंस जाता है तो कर्ण अर्जुन को कहता है कि युद्ध के, धर्म के नियम से नि:शस्त्र पर प्रहार करना अधर्म होगा। श्रीकृष्ण जो उत्तर देते हैं उसे यदि हम स्मरण कर लेंगे तो जीवन में हमें कभी कोई मूर्ख नहीं बना सकता। वह उत्तर था कर्ण धर्म तो उनके साथ किया जाता है जो स्वयं धार्मिक हैं, तुमने कल ही अभिमन्यु की हत्या अधर्म से की है, युद्ध का धर्म है एक व्यक्ति के साथ एक ही व्यक्ति युद्ध कर सकता है परन्तु तुम सात लोगों ने मिलकर एक अभिमन्यु को मारा, ऐसे तुम हमें धर्म का पाठ पढ़ाते हो। कृष्ण ने कहा अर्जुन कर्ण पर धनुष चलाने में कोई अधर्म नहीं है इसको तुम बिना संकोच मार डालो। सारी गीता में मनुष्य को अपने कर्त्तव्य में आने वाली बाधाओं को किस प्रकार दूर करना है यही बताया है।

मोदी और गीता भक्तों को अभी समझने की आवश्यकता है कि गीता से आगे उपनिषद् और उससे आगे वेद है। हिन्दू गीता इसलिए नहीं पढ़ता कि गीता का उपदेश अन्तिम है। हिन्दू गीता से आगे नहीं बढ़ पाया क्योंकि समाज में आरक्षण प्राप्त ब्राह्मणों ने शेष समाज को

वेद पढ़ने के अधिकार से वञ्चित कर दिया। जिस पक्षपात को शंकराचार्य जैसे विद्वान् भी मान्यता देने के लिए बाध्य रहे। आचार्य शंकर ने पुराने लोगों की नीति को दोहराते हुए **''स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम् इति श्रुतेः''** कहकर स्त्रियों और शूद्रों के वेद पढ़ने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। आज गीता पढ़कर इस प्रतिबन्ध को समाप्त कर वेद की प्रतिष्ठा न कर सके तो हमारा गीता पढ़ना भी व्यर्थ है।

गीता का प्रयोजन है जो अर्जुन यह कहता है कि अपने माता-पिता, मामा, चाचा, साले, बहनोई, आचार्य, शिष्य, पुत्र सब मेरे अपने हैं इनको मैं नहीं मारूँगा। यह मेरा राज्य मेरे अपनों के लिए है फिर उनको मारकर मुझे तो पाप ही लगेगा। तब श्रीकृष्ण ने कहा- तू चिन्ता मत कर, युद्ध में मर गया तो स्वर्ग मिलेगा और जीवित रहा तो राज्य ऐश्वर्य का उपयोग करेगा क्योंकि तेरे अपने आत्मा के अजर-अमर होने से मरेंगे नहीं और पाप का नाश करने में अपना-पराया कुछ होता नहीं। इस उपदेश की समाप्ति होती है जब अर्जुन कह उठता है-

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा, त्वत् प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव।।

मेरा मोह नष्ट हो गया है, मेरी बुद्धि ठिकाने आ गई है, तेरे उपदेश से सन्देह समाप्त हो गए हैं, जो भी तू कहेगा करने के लिए तैयार हूँ।

गीता प्रेरणा और पुरुषार्थ का ग्रन्थ है, पूजा और सिर झुकाने का नहीं।

- धर्मवीर

प्रार्थना

- मनोहर सिंह 'मनसा'

यज्ञ रूप प्रभू हमारे, भाव उज्जवल कीजिये।
घर-घर में गूंजे ये पुकार-नमस्कार! नमस्कार!!
वेदों की ऋचाएँ गावें, उपनिषदों की शिक्षा पावें।
तब संस्कारी होगा संसार, नमस्कार-नमस्कार!!
वेदों के रक्षक दयानन्द, अमर बलिदानी श्रद्धानन्द!
गावें आपकी जय-जयकार, नमस्कार-नमस्कार!!
'इदन्नमम' का पारायण कराया, वेदों का पाठ पढ़ाया।
गावें यश सारा संसार, नमस्कार-नमस्कार!!
राजा दशरथ के लाडले, माता कौशल्या के दुलारे।
करो रावण का संहार, नमस्कार-नमस्कार!!
बाबा नन्द के दुलारे, माता यशोदा के प्यारे।
गीता के हे गीतकार, नमस्कार-नमस्कार!!
चाहे छोटा हो या मोटा, सब है ईश्वर की सन्तान।
मत करो भेद का व्यवहार, नमस्कार-नमस्कार!!
सदा होती सत्य की जीत, ये हैं ऋषियों की आशीष।
मत करो झूठ का व्यापार, नमस्कार-नमस्कार!!
'इदन्नमम' का भाव रखकर, करें स्वाहा-स्वाहा।
'मनसा' करे सबका सत्कार, नमस्कार-नमस्कार!!

- जोधपुर, राजस्थान

ऋषि मेला २०१४ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष ऋषि मेला ३१ अक्टूबर, १, २ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१४ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा :- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**-७.५ × १५ फीट।

ध्यातव्य : -१. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना अनुमति के पूर्व में स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

कृतकृत्य किसे कहते हैं?

- स्वामी विष्वङ्

संसार में मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो इच्छाओं के आधार पर जीवन यापन करता है। मनुष्य जीवित है तो इच्छाओं के कारण। यदि इच्छाएँ न हों तो मनुष्य का जीना दुष्कर हो जायेगा। इसलिए इच्छाओं (आकांक्षाओं) को संजोता हुआ जीवन व्यतीत करता है। यद्यपि इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है अर्थात् इच्छाएँ अनगिनत हैं। कोई भी मनुष्य इच्छाओं की गणना नहीं कर सकता। अनगित इच्छाओं का बोझ अपने ऊपर लेकर मनुष्य सरलता से जीवन व्यतीत करता हुआ दिखाई देता है। मनुष्य की महत्त्वाकांक्षाएँ मनुष्य को जीवित रखती हैं। यदि महत्त्वाकांक्षाएँ न हों तो मनुष्य पुरुषार्थ ही नहीं करेगा। इसलिए आकांक्षाएँ होनी चाहिए। मनुष्य अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए पुरुषार्थ करता है परन्तु सामान्य पुरुषार्थ से इच्छाएँ पूर्ण नहीं हो पाती हैं। इसलिए कोई-कोई अपनी इच्छा को पूर्ण करने के लिए **'अत्यन्त पुरुषार्थ'** करता है अर्थात् इतना पुरुषार्थ करता है कि कोई भी बुद्धिमान् यह नहीं कह सकता कि इससे भी अधिक पुरुषार्थ हो सकता है। अभिप्राय यह है कि जिस पुरुषार्थ में न्यूनता (कमी) न हो उसे पूर्ण पुरुषार्थ या अत्यन्त पुरुषार्थ कहते हैं। जब मनुष्य अत्यन्त पुरुषार्थ करने लगता है तब उसके सामने अनेक प्रकार की समस्याएँ, बाधाएँ, कठिनाईयाँ या विपत्तियाँ आ जाती हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य यदि नहीं घबराता है, उनका सामना करता है, उनका समाधान करता है, उनको सहन करता हुआ तप करता है और वह तप भी सामान्य तप न हो कर **'घोर तप'** करता है। इस तप को इस रूप में भी कह सकते हैं कि वह सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, हानि-लाभ, मान-अपमान आदि द्वन्दों को अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए सहन करता है। अत्यन्त पुरुषार्थ व घोर तप के साथ-साथ **'उत्तम-विधि'** को भी अपनाता है। यद्यपि विधियाँ अनेक प्रकार की होती हैं परन्तु ऐसी विधि को अपनाता है जो अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर सके।

मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए **'अनुकूल साधनों'** को भी अपना लेता है। जो मनुष्य किसी भी उपलब्धि को हस्तगत करना चाहता है, तो वह अत्यन्त पुरुषार्थ, घोर तप, उत्तम विधि और अनुकूल साधनों को अपना कर ही हस्तगत कर सकता है। यदि संसार की ओर दृष्टि डाल कर देखा जाये, तो स्पष्ट प्रतीति होती है कि भूमि (धरती) हीन व्यक्ति भूमि की उपलब्धि के लिए उद्यम करता हुआ दिखाई देता है। यूँ तो बहुत सारे लोग उद्यम करते हुए दिखाई देंगे परन्तु उनमें जो इन कारणों (अत्यन्त पुरुषार्थ आदि) को अपनाता है वही व्यक्ति भूमि की उपलब्धि करता हुआ दिखाई देता है। बाकी लोग नहीं। इसी प्रकार धन-हीन व्यक्ति विपुल धन की उपलब्धि करता हुआ दिखाई देता है, नौकरी-हीन व्यक्ति नौकरी की उपलब्धि करता हुआ दिखाई देता है। इसी प्रकार अलग-अलग विषयों की उपलब्धियों को प्राप्त करने वाले अलग-अलग लोग दिखाई देते हैं। उपलब्धियों को प्राप्त करना मनुष्य जीवन का उद्देश्य-लक्ष्य-प्रयोजन है परन्तु उन उपलब्धियों को प्राप्त कर लेना उचित-यथार्थ होता है, जिन्हें प्राप्त करके मनुष्य **'कृतकृत्य'** होता हो। मनुष्य संसार की अलग-अलग उपलब्धियों को प्राप्त करके भी और तृष्णा-लालसा को बढ़ा लेता है। जिससे मनुष्य को अतृप्ति, असन्तोष, भय, परतन्त्रता और अपार दुःख ही हाथ लग जाता है। इसलिए मनुष्य को यह विचार करके चलना चाहिए कि किन इच्छाओं को पूर्ण करना चाहिए और किन इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए पुरुषार्थ नहीं करना चाहिए। जहाँ चयन (चुनने) की प्रक्रिया आती हो वहाँ जानकारी (ज्ञान) की आवश्यकता पड़ती है। बिना ज्ञान के मनुष्य सफल नहीं हो सकता। ज्ञान के विषय में अनेक बार चर्चा हो चुकी है। यहाँ केवल इतना कहना चाहते हैं कि **'कृतकृत्यता'** बिना विशेष ज्ञान के सम्भव नहीं है। इसलिए वेद कहता है- **'विद्ययाऽमृतमश्नुते'**। (यजुर्वेद ४०.१४) अर्थात् विद्या से-ज्ञान से अमृत-मोक्ष-मुक्ति मिलती है। मनुष्य समाधि-ईश्वर साक्षात्कार करके ईश्वरीय आनन्द का उपभोग जिस दिन कर लेता है उस दिन यथार्थ रूप में कृतकृत्य हो जाता है।

समाधि प्राप्त करने के लिए अनेक उपलब्धियों को हस्तगत करना होगा। जब मनुष्य को उपलब्धियों को प्राप्त करना ही है, तो उन उपलब्धियों को प्राप्त करना होगा जिन

को प्राप्त करने से समाधि लगती है। संसार में मनुष्य दो प्रकार के होते हैं कुछ लोग सांसारिक (भूमि, धन, गाड़ी, भवन आदि) उपलब्धियों को प्राप्त करते हैं और कुछ लोग आध्यात्मिक (विवेक, वैराग्य आदि) उपलब्धियों को प्राप्त करते हैं। बुद्धिमान् को स्पष्ट प्रतीति होती है कि कितनी भी सांसारिक उपलब्धियों को क्यों न प्राप्त किया जाये वहाँ तृष्णा-लालसा बढ़ती हुई ही दिखाई देती है परन्तु आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त करने पर तृष्णा-लालसा न्यून (कम) होती हुई दिखाई देती है। इसलिए बुद्धिमान् आध्यात्मिक उपलब्धियों को हस्तगत करने के लिए उद्यम करता है। संसार में अधिक संख्या सांसारिक उपलब्धियों को प्राप्त करने वालों की है और आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त करने वालों की संख्या बहुत कम मात्रा में है। जो नगण्य प्राय: है अर्थात् सांसारिक लोगों की अपेक्षा न के बराबर है। आध्यात्मिक लोगों की संख्या भले ही न्यून (कम) हों परन्तु जो व्यक्ति आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त करना चाहते हैं वे निराश न हो कर आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करना प्रारम्भ करें। जिससे आध्यात्मिकता जीवन में दिखाई दे अर्थात् दु:खों की न्यूनता (कमी) होती रहे और पुरुषार्थ में शीघ्रता (तेजी) आ सके।

आध्यात्मिक साधकों की अपेक्षा से देखा जाये तो बहुत से साधक पुरुषार्थ तो करते हैं परन्तु उनको उस प्रकार की सफलता नहीं मिलती है। जिस प्रकार की सफलता लौकिक व्यक्तियों को मिलती है। ऐसी स्थिति में साधक हताश-निराश होता हुआ दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में साधक को हताश-निराश न हो कर यह विचार करना चाहिए कि जिस प्रकार लौकिक व्यक्ति जिन अत्यन्त पुरुषार्थ, घोर तप, उत्तम विधि और अनुकूल साधनों को अपना कर अपनी इच्छाओं को पूर्ण करते हैं। क्या हम (साधक) भी उसी प्रकार उद्यम करते हैं? यदि नहीं करते हैं तो वैसी उपलब्धि नहीं मिल सकती है। यदि वैसा ही उद्यम हम (साधक) करते हैं तो अवश्य उपलब्धि मिलेगी। यहाँ पर अत्यन्त धैर्य रखना पड़ता है क्योंकि लौकिक उपलब्धियाँ अधिकांश इसी वर्तमान जीवन में प्राप्त होने वाली होती हैं और वे उपलब्धियाँ शीघ्र भी समाप्त होने वाली होती हैं। इसलिए वे उपलब्धियाँ शीघ्र दिख जाती हैं। आध्यात्मिक विशेष उपलब्धियाँ (जैसे- विवेक-वैराग्य) शीघ्र (एक जन्म में) प्राप्त होने वाली नहीं हैं। इन उपलब्धियों के लिए सम्पूर्ण जीवन लगाना पड़ता है और यदि इस वर्तमान जीवन में न मिल सके तो आगे के जन्मों में अवश्य मिल सकेंगी। इसलिए बहुत अधिक धैर्य रखना पड़ता है। यहाँ पर कोई ऐसा न समझे कि इस वर्तमान जन्म में ये उपलब्धियाँ नहीं मिलेंगी, ऐसा नहीं है। यदि कोई पूर्वोक्त कारणों को पूर्ण रूप से अपने जीवन के साथ जोड़कर चले तो इस वर्तमान जन्म में भी मिल सकती हैं। ऐसी स्थिति उस व्यक्ति के पूर्व जन्मों का पुरुषार्थ अधिक होगा या कुछ पुरुषार्थ पूर्व जन्म का और अधिक पुरुषार्थ इस वर्तमान जन्म का मानना चाहिए।

यह कथन **'इदमित्थम्'** के रूप में न लेकर अर्थात् ऐसा ही होगा, ऐसा अर्थ न लेकर परिस्थिति के अनुसार जहाँ जैसा देखा जाये वहाँ वैसा अर्थ प्रमाणों के आधार पर निर्णय करना चाहिए। कहने का अभिप्राय है कि आध्यात्मिक ऊँची उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए उसी स्तर का पुरुषार्थ करना पड़ता है। जो प्राय: साधक वैसा नहीं कर पाता है। इस बात को वह साधक अच्छी प्रकार जान सकता है जो इस विषय में पुरुषार्थ करता हो। यहाँ इस प्रकार का कथन करके किसी भी साधक को हतोत्साहित करना लेश मात्र भी प्रयोजन नहीं है। इस कथन का मुख्य प्रयोजन है कि हमें भ्रान्ति में नहीं रहना है और प्रमाणों से स्वयं की परीक्षा करते रहना चाहिए। जिससे हम (साधक) आध्यात्मिक मार्ग में आगे ही बढ़ते रहें, पीछे मुड़कर न देखें। यहाँ पर लौकिक और आध्यात्मिक उपलब्धियों की तुलना इसलिए की गयी हैं, जिससे साधक अपनी उचित (प्रमाण पूर्वक) तुलना कर सके और लौकिक उपलब्धियों को प्राप्त करने वालों से प्रेरणा भी ले सके। यहाँ पर लौकिक व्यक्तियों के पुरुषार्थ को अनसुना भी नहीं कर सकते। उनका महान् पुरुषार्थ ही उनको सफलता प्रदान करवा रहा है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। हाँ, वे सफल हो कर भी **'कृतकृत्य'** नहीं हो पाते हैं क्योंकि उनकी सफलताएँ शीघ्र समाप्त होने वाली होती हैं। इसलिए उनमें सफलता से पहले जिस प्रकार की इच्छाएँ थीं उससे भी अधिक इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं, क्योंकि इच्छाओं की परिसमाप्ति नहीं होती है। परन्तु आध्यात्मिक व्यक्तियों की इच्छाओं की पूर्ति भले ही देर से होती हों पर सफलता मिलने पर उनकी इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं। इच्छाओं का समाप्त होना अपने-आप में बहुत बड़ी सफलता है। इसी कारण आध्यात्मिक व्यक्ति कृतकृत्य हो जाता है।

यहाँ पर यह समझना आवश्यक है कि एक ओर से यह कहा जाता है इच्छाओं की परिसमाप्ति नहीं होती है और दूसरी ओर आध्यात्मिक व्यक्तियों की इच्छाएँ समाप्त होती हैं। यहाँ दोनों बातों में विरोध प्रतीत हो रहा है। हाँ, विरोध प्रतीत अवश्यक हो रहा है परन्तु इच्छाओं को समझने की आवश्यकता है। इच्छाएँ दो प्रकार की होती हैं। लौकिक इच्छाएँ और आध्यात्मिक इच्छाएँ। लौकिक इच्छाएँ पूर्ण इसलिए नहीं होती हैं क्योंकि उनके पीछे अविद्या जुड़ी हुई होती है और कोई संसार का सबसे बड़ा धनिक बनना चाहता है, तो एक ही बन पायेगा सभी नहीं। यदि कोई सांसारिक सुख को प्राप्त करके पूर्ण सुखी होना चाहता है, तो नहीं हो सकता क्योंकि सांसारिक सुख अपूर्ण है। अपूर्ण अपूर्ण ही रहता है कभी पूर्ण नहीं बनता है इत्यादि अनेक कारण हैं। इसलिए सांसारिक इच्छाएँ पूर्ण नहीं होती हैं। इसके विपरीत आध्यात्मिक इच्छाएँ पूर्ण इसलिए होती हैं क्योंकि उनके पीछे तत्त्वज्ञान (विद्या) जुड़ा हुआ होता है और प्रत्येक आध्यात्मिक व्यक्ति पूर्ण सुख (ईश्वरीय सुख) प्राप्त कर सकता है। आध्यात्मिक व्यक्ति कोई ऐसी इच्छा उत्पन्न नहीं करता जो पूर्ण नहीं होती हो अर्थात् उसकी सारी इच्छाएँ विद्या (तत्त्वज्ञान) से युक्त होने से पूर्ण होने वाली ही होती हैं। हाँ, यदि आध्यात्मिक व्यक्ति लौकिक इच्छा उत्पन्न कर ले, तो वह आध्यात्मिकता से पतित हो जाता है और वह भी लौकिक बन जाता है इत्यादि अनेक कारण हैं। इसलिए आध्यात्मिक इच्छाएँ पूर्ण होती हैं।

जहाँ पर, जब कभी यह कथन किया जाता है कि इच्छाएँ पूर्ण नहीं होती हैं। उनका अभिप्राय सांसारिक इच्छाएँ (कामनाएँ) हैं, ऐसा समझना चाहिए। परन्तु इसके विपरीत शब्द प्रमाण आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए निर्देश करता है कि उसकी सभी कामनाएँ (इच्छाएँ) पूर्ण होती हैं-

य आत्माऽपहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघत्सोऽपिपासः, सत्यकामः सत्यसंकल्पः सोऽन्वेष्टष्यः स विजिज्ञासितव्यः। स सर्वांश्च लोकानाप्नोति सर्वांश्च कामान्यस्तमात्मानम्, अनुविद्य विजानातीति ह प्रजापतिरुवाच।।

(छान्दोग्य ८.७.१)

अर्थात् प्रजापतिः= प्रजापति नाम वाले ऋषि ने उवाच=कहा है-घोषण की है कि यः आत्मा=जो आत्मा अपहतपाप्मा=निष्पाप, निष्कलुष अर्थात् पाप रहित है विजरः= जरा-बुढ़ापा से रहित है, विमृत्युः=अमर है विशोकः=शोक से रहित है विजिघत्सः=भूख से रहित है अपिपासः= जल-पान की इच्छा से रहित है सत्यकामः= सत्य कामनावाला है सत्यसंकल्पः= सत्य संकल्पवाला है सः अन्वेष्टव्यः= उसका अन्वेषण (खोज-ज्ञान) करना चाहिए अर्थात् वह परमेश्वर है उसका समाधि द्वारा प्रत्यक्ष करना चाहिए सः विजिज्ञासितव्यः= उस परमेश्वर को ही जानने की इच्छा करनी चाहिए। सः= वह (योगाभ्यासी) अर्थात् जिसने परमेश्वर को जाना और प्रत्यक्ष किया, ऐसा वह सर्वान् च लोकान् आप्नोति=सब लोकों को प्राप्त (ज्ञान लेता है) करता है सर्वान् च कामान्=और सब कामनाओं (इच्छाओं) को पूर्ण कर लेता है यः= जो योगाभ्यासी तम्=उस आत्मानम्=परमात्मा को अनुविद्य=जान कर, खोज कर विजानाति=जान लेता है इति=यह (वचन) ह= पूरा काल में (ऋषि ने) कथन किया है।

यहाँ पर उपनिषद्कार ने स्पष्ट शब्दों में कथन किया है कि आध्यात्मिक साधक (योगाभ्यासी) सत्य कामना (इच्छाओं) वाला होता है क्योंकि ईश्वर स्वयं सत्यकाम है सत्य संकल्पवान् है। ईश्वर के सानिध्य में रहने वाला योगाभ्यासी असत्य संकल्पवान् नहीं हो सकता। इसलिए उसकी सारी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। जिस व्यक्ति की सारी इच्छाएँ पूर्ण होती हों वही व्यक्ति **'कृतकृत्य'** हो सकता है। कृतकृत्य का अभिप्राय है कि **'कृत'** का अर्थ किया और **'कृत्य'** का अर्थ करने योग्य। इन दोनों को मिलाया जाये, तो मनुष्य के जो-जो करने योग्य हैं उन सब को जिसने पूर्ण किया हो उसे कृतकृत्य कहा जाता है। ऐसा केवल आध्यात्मिक व्यक्ति ही कर सकता है। जो व्यक्ति अपने जीवन को योगमय बनाता है अर्थात् योग में जैसा निर्देश-उपदेश किया है वैसा ही करता है, तो वह योगाभ्यासी कहलाता है और उसी को आध्यात्मिक कहा जाता है। वही व्यक्ति उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य को यथार्थ रूप में जानकर-समझ कर जो-जो उचित, न्याय, धर्म, सत्य, पुण्य से युक्त होता है उस-उसको करता है और जो-जो उचित, न्याय आदि से विपरीत अनुचित, अन्याय आदि से युक्त होता है उस-उस को कभी नहीं करता है।

कृतकृत्य को समझाते हुए यह कहा गया है कि जो-जो करने योग्य हैं उन-उनको कर लिया जाता है। वे कौन से हैं? जिनको करने पर मनुष्य कृतकृत्य बन जाता है। महर्षि पतञ्जलि ने योग में करने योग्य कार्यों का कथन-

उपदेश किया है, उन सब कार्यों को योगाभ्यासी कर लेता है। उन कार्यों में मुख्य कार्य ये हैं-

प्राप्तं प्रापणीयं, क्षीणाः क्षेतव्याः क्लेशाः,
छिन्नः श्लिष्टपर्वा भवसंक्रमः।

(योगदर्शन १.२६)

अर्थात् प्राप्तं प्रापणीयम्= जो प्राप्त करने योग्य परमेश्वर है, उस परमेश्वर को योगाभ्यासी प्राप्त कर लेता है अर्थात् ईश्वर का साक्षात्कार समाधि द्वारा करता है। यह कार्य संसार में सब से उत्तम है, इससे उत्कृष्ट कार्य और नहीं हो सकता। ईश्वर साक्षात्कार रूपी कार्य अपने-आप में इतना बड़ा कार्य है, जिसके पीछे अनेकों कार्य अपने-आप ही हो जाते हैं। दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य यह है कि क्षीणाः क्षेतव्याः क्लेशाः=नष्ट करने योग्य अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश हैं। इन पाञ्चों क्लेशों को नष्ट कर देता है। यह छोटी-मोटी उपलब्धि नहीं है। यह महान् उपलब्धि है। संसार में अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग उपलब्धियों को प्राप्त करने वाले बहुत सारे लोग हैं परन्तु वे सब इस महान् उपलब्धि से वञ्चित रहते हैं। जो लोग सांसारिक बड़ी-बड़ी उपलब्धियों (धन, पद, विज्ञान आदि) को भले ही प्राप्त किये हों परन्तु वे अविद्या से ग्रस्त होकर, अस्मिता से ग्रस्त होकर, राग से ग्रस्त होकर, द्वेष से ग्रस्त होकर और भय से ग्रस्त होकर महान् दु:खी होते हैं या रहते हैं। यद्यपि वे बाहर से सुखी दिखाई देते हैं परन्तु अन्दर से दु:खी रहते हैं। इसके पीछे मुख्य कारण है उनकी अविद्या। दूसरी ओर आध्यात्मिक व्यक्ति जिसने अविद्या को नष्ट किया हो, वह व्यक्ति अन्दर से सुखी होता है और बाहर से दूसरों को दु:खी दिखाई देता है।

यहाँ पर यह नहीं समझना चाहिए कि जिसने अविद्या को नष्ट किया है, वह बाहर से दु:खी होता हो। हाँ, अन्य (दूसरे) लोग भ्रान्ति (अविद्या) से ऐसा समझते हैं। क्योंकि योगी बाह्य आडम्बरों (धन, सम्पत्ति, मोटर-गाड़ी आदि) से रहित सीधा-साधा सरल दिखाई देता है अर्थात् अपरिग्रह=सीमित-अति आवश्यक साधनों का ही प्रयोग करता है। इसलिए साधारण जनता को ऐसा प्रतीत होता है कि यह व्यक्ति साधनों से रहित है, इसलिए दु:खी होगा, ऐसा मान लेते हैं। परन्तु योगी जहाँ अन्दर से सुखी रहता है वहाँ बाहर से भी सीमित साधनों में रहकर भी सुखी रहता है, कभी भी अपने-आपको साधन हीन नहीं समझता है। योगी यह मान कर उन साधनों का त्याग करता है जिनके बिना मैं अपने लक्ष्य को पूर्ण कर सकता हूँ, तो उन साधनों को अपने पास रख कर क्या करूँगा? इसलिए योगी उन साधनों की इच्छा कभी नहीं करता है। योगी परमेश्वर से सदा (ज्ञानपूर्वक) युक्त रहता है, इस कारण वह कभी दु:खी नहीं होता परन्तु लौकिक व्यक्ति सदा लौकिक वस्तुओं से युक्त रहते हैं और वे वस्तुएँ उन्हें सदा सुखी इसलिए नहीं करती हैं क्योंकि वे अपूर्ण हैं। अपूर्ण सदा अपूर्ण ही रहेंगी। दूसरी ओर ईश्वर पूर्ण है और पूर्ण ईश्वर से युक्त योगी कभी दु:खी नहीं हो सकता। इसलिए जिसने परमपिता परमेश्वर को प्राप्त कर जीया हो वही इस अनुभूति को कर पाता है। इसी कारण योगी 'प्राप्तं प्रापणीयम्' की स्थिति में होता है और वही समस्त क्लेशों को नष्ट कर पाता है, अन्य मनुष्य नहीं। क्लेशों को नष्ट करना परमेश्वर की सन्निधि के बिना कभी सम्भव नहीं है। यदि मनुष्य ईश्वर की सन्निधि को छोड़ कर किसी अन्य मनुष्य की शरण में जाये, तो कभी भी क्लेश दूर नहीं हो सकते। कारण यह है कि जो मनुष्य स्वयं क्लेशों से युक्त हो वह दूसरे के क्लेशों को दूर कभी नहीं कर सकता। इसलिए संसार में क्लेशों को दूर करने का एक मात्र माध्यम ईश्वर ही है। इसलिए कहा है ईश्वर के साक्षात्कार से क्लेश दूर होते हैं।

मनुष्य के द्वारा करने योग्य तीसरा महत्त्वपूर्ण कार्य है '**छिन्नः श्लिष्टपर्वा भवसंक्रमः**' अर्थात् एक शरीर को छोड़ कर दूसरे शरीर को प्राप्त करने रूप जन्म और मरण को भवसंक्रम कहते हैं। और यह जन्म व मरण मानो जंजीर के समान है। जिस प्रकार एक कड़ी दूसरी कड़ी के साथ जुड़ी हुई होती है। ये कड़ियाँ इस प्रकार से गुंथी हुई हैं कि निकलना बड़ा कठिन है। इस गुंथी हुई स्थिति को महर्षि वेदव्यास ने 'श्लिष्ट' शब्द से स्पष्ट किया है और कड़ियों को 'पर्व' शब्द से स्पष्ट किया है। एक वाक्य में कहा जाये तो- बार-बार जन्म व मरण की कड़ियों से जकड़ी हुई संसार-बन्धन रूपी जंजीर को छिन्नः=नष्ट हो गई है या नष्ट करता है। यह कोई छोटी-मोटी उपलब्धि नहीं है। संसार के इस सर्वश्रेष्ठ कार्य को वही कर सकता है, जो योगाभ्यासी (आध्यात्मिक व्यक्ति) है। जिस के साथ ईश्वर है अर्थात् जिसको ईश्वर का विशेष सहयोग प्राप्त है। यह आत्मविश्वास योगी ही कर सकता है और कह सकता है कि 'मेरा अगला जन्म नहीं होगा, मैंने मृत्यु को जीत लिया है, मैं मृत्युञ्जय बन गया हूँ।' यह साहस आध्यात्मिक योगाभ्यासी के अतिरिक्त और कोई नहीं कर

सकता।

आध्यात्मिक योगाभ्यासियों (जिन्होंने उपरोक्त उपलब्धियों को प्राप्त किया हों उनसे) से भिन्न जो सांसारिक लोग हैं चाहे वैज्ञानिक भी क्यों न हों, वे सब के सब बार-बार जन्म और मरण को प्राप्त होते रहे हैं, इस सम्बन्ध में महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

यस्याविच्छेदाजनित्वा म्रियते मृत्वा च जायत इति।

(योगदर्शन १.१६)

अर्थात् जो लोग उपरोक्त उपलब्धियों को प्राप्त नहीं करते हैं ,वे जन्म और मरण रूपी चक्र को छिन्न-भिन्न नहीं कर सकते हैं। वे तो जन्म लेकर मृत्यु को प्राप्त होते हैं और मृत्यु से फिर जन्म लेते रहते हैं। इस जन्म और मरण रूपी चक्र से छुटकारा वे ही पा सकते हैं जो 'प्राप्तं प्रापणीयम्'= ईश्वर को पा लेते हैं। प्राप्त करने योग्य ईश्वर को प्राप्त किये बिना इस महान् दु:खकारी जन्म व मरण के चक्र से हटना असम्भव है। ईश्वर प्राप्ति के उपाय के बिना और कोई उपाय नहीं है। इसलिए **'कृतकृत्य'** बनना मनुष्य का मुख्य प्रयोजन होना चाहिए और इस प्रयोजन को आध्यात्मिकता को अपनाये बिना पूरा नहीं किया जा सकता। इस कारण मनुष्य को इस अभिमान में नहीं रहना चाहिए कि 'मैं वैज्ञानिक हूँ, मैं उच्च पद पर आसीन हूँ, मैं दुनिया का सबसे अधिक धनिक हूँ, मैं वक्ता हूँ, मैं लेखक हूँ, मैं खिलाड़ी हूँ या मैं वेदज्ञ हूँ इत्यादि सभी योग्यताएँ एक तरफ हैं और योगदर्शन में बतायी गई प्राप्तं प्रापणीयम्........ वाली योग्यताएँ दूसरी तरफ हैं। जिन योग्यताओं से कृतकृत्य बनते हों उन्हीं योग्यताओं को प्राप्त करना मनुष्य का प्रयोजन होना चाहिए।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का नि:शुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमश: हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

एक आपत्तिजनक पुस्तक का उत्तर

– राजेन्द्र जिज्ञासु

श्रद्धाराम फिल्लोरी की ऋषि के प्रति श्रद्धा :- भारत सरकार की साहित्य अकादमी ने एक तथ्यहीन, भ्रामक तथा आपत्तिजनक पुस्तक प्रकाशित की है। पुस्तक का नाम ही हास्यास्पद है- **'भारतीय साहित्य के निर्माता- श्रद्धाराम फिल्लौरी'।** पुस्तक को छपे हुए एक वर्ष से ऊपर हो गया है। हमें आश्चर्य होता है कि दिल्ली के किसी भी आर्यसमाजी वक्ता, प्रवक्ता, नेता, लेखक, सम्पादक को इसके छपने का पता नहीं लगा।

कर्मवीर श्री पं. रामचन्द्र जी आर्य सोनीपत वालों को इसके प्रकाशन की सूचना मिली। आपने इसे क्रय किया। तीन दिन लगातार साहित्य अकादमी के निर्देशक से मिलने के लिए वहीं डेरा लगाया। जब भेंट का समय नहीं मिला तो एक प्रति डॉ. धर्मवीर जी को पहुँचाई। एक प्रति श्री लक्ष्मण जी जिज्ञासु को मेरे लिए भेंट की। रामचन्द्र जी का मेरा वर्षों पुराना सम्बन्ध है। मुझे चलभाष पर पुस्तक की मुख्य-मुख्य बातें बताकर इसका युक्ति तथा अकाट्य प्रमाणों से उत्तर देने की आज्ञा दी। विद्वान् ऋषि भक्त भाई रामचन्द्र जी का आदेश तो मैंने शिरोधार्य किया। पुस्तक के आर-पार भी हो गया।

कोई दिल्ली का नेता लिखता:- सब बातों के उत्तर भी मेरे मस्तिष्क में तत्काल आ गये। मैंने रामचन्द्र जी तथा उत्तर देने का दबाव बनाने वाले सब ऋषि भक्तों से कहा, ''मैं तो उत्तर देने को प्रतिपल तैयार हूँ परन्तु अच्छा हो यदि दिल्ली से ही कोई बड़ा व्यक्ति इस प्रहार का प्रतिकार करे। टंकारा, उदयपुर आदि कई स्थानों पर ऋषि के नाम पर कई संस्थायें हैं, वे आगे आकर कुछ लिखें, बोलें, कुछ करें तो यह आनन्ददायक घटना होगी। जब श्री रामचन्द्र जी, श्री लक्ष्मण जी जिज्ञासु से इधर-उधर आर्यों में इस पुस्तक की चर्चा फैलती गई और सब ओर से 'परोपकारी' में इसका उत्तर देने का दबाव बना तो मैंने श्री डॉ. धर्मवीर जी से भेंट करके पूछा, ''कहिये! अब क्या करना है?''

मान्य धर्मवीर जी ने तत्काल कहा, ''हमने समय नहीं गंवाना। हममें किसी के लिए नहीं लिखना। हमने तो ऋषि तथा ऋषि के मिशन पर हर वार का उत्तर देना है।''

पुस्तक का नाम तथा पुस्तक-लेखक:- पुस्तक का तो नाम ही हास्यास्पद है। साहित्य अकादमी के संचालक बन्धुओं की इसे भूल-चूक कहें या कुछ और? पं. श्रद्धाराम जी कवि थे, लेखक थे। अच्छे ज्योतिषी और वक्ता थे परन्तु उन्हें **भारतीय साहित्य का निर्माता** बताना तो एक अक्षम्य अपराध है। क्या श्री श्रद्धाराम ने सांख्य, न्याय, योग, अर्थशास्त्र, मेघदूत आदि की रचना की? क्या उन्हीं से भारतीय साहित्य का निर्माण आरम्भ हुआ?

इस पुस्तक के लेखक श्री राजेन्द्र टोकी खन्ना में प्राध्यापक हैं। इन्होंने पं. श्रद्धाराम जी के चेले श्रीमान् साधु तुलसीदेव जी लिखित पं. श्रद्धाराम जी के जीवन चरित को ही काँट-छाँट करके परोस दिया है। कुछ हिन्दी साहित्य के इतिहास विषयक पुस्तकें देखीं। पाँच पुस्तकें पंजाबी साहित्य की पढ़कर अपने को धन्य-धन्य समझ लिया। श्रद्धाराम जी के जीवन की सामग्री की खोज के लिए एक भी तत्कालीन पत्रिका नहीं देखी।

अघटित घटनायें:- पुस्तक में यत्र-तत्र मुंशी कन्हैयालाल जी अलखधारी पर टिप्पणियाँ हैं। महर्षि दयानन्द की निन्दा के लिए बहुत कुछ लिखा गया है। लेखक ने बिना जाँच-पड़ताल के अघटित घटनायें भी सुन-सुना कर या उठाकर दे दी हैं। इसी पुस्तक में आप लिखते हैं, ''पण्डित जी स्वामी जी की बातों का खण्डन करते रहे, स्वामी जी के खण्डन का खण्डन सुनाते रहे। स्वामी जी सियालकोट गए तो पण्डित जी भी पीछे-पीछे वहाँ पहुँचे। अपना सिक्का जमाकर पण्डित जी तो वापस लौट आए।''[१]

महर्षि दयानन्द सियालकोट गये ही नहीं। सियालकोट तो क्या, सियालकोट जनपद के किसी ग्राम, कस्बा व नगर में भी उन्हें जाने का समय नहीं मिला। ऋषि के किसी भी जीवनी लेखक, किसी देशी-विदेशी विद्वान् की किसी भी पुस्तक में उनके सियालकोट जाने का उल्लेख नहीं है। मनगढ़न्त अघटित घटनायें देने से किसी लेखक का गौरव बढ़ता नहीं, घटता ही है।

लेखक यदि हमसे सम्पर्क करते:- पुस्तक लेखक श्री राजेन्द्र जी ने बार-बार ऋषि दयानन्द की चर्चा तो कर दी परन्तु ऋषि के जीवन-चरित को उठाकर देखा ही नहीं। यदि आप अजमेर आने का कष्ट उठाते तो परोपकारिणी

सभा आपको श्रद्धाराम जी से सम्बन्धित कई अलभ्य दस्तावेज दिखाती। श्रद्धाराम जी की हस्तलिखित सामग्री आप यहीं देख पाते। अलखधारी जी की पत्रिका व साहित्य और कहीं सम्भव है, नहीं देख पायेंगे। श्रद्धाराम जी के काल की कुछ पत्रिकायें आपको यहीं देखने को मिल सकती हैं।

पुस्तक लेखक को यह पता ही नहीं कि महर्षि दयानन्द जी के पत्रों में श्रद्धाराम जी के प्रति अनादर या निन्दा का एक भी शब्द नहीं मिलता। अलखधारी जी के नीति प्रकाश पत्र में भी हमें तो श्रद्धाराम जी की निन्दा में लिखे गये कोई वाक्य नहीं मिले। अपवाद हो सकता है। लेखक महोदय को कुछ तो जाँच करनी चाहिये थी। देश के विख्यात इतिहासकार तथा क्रान्तिकारी भाई परमानन्द जी की एक पुस्तक में श्रद्धाराम जी का उल्लेख है। इतने महान् इतिहासकार व क्रान्तिकारी भाई परमानन्द जी को उद्धृत किया होता तो लेखक का गौरव बढ़ता।

श्रद्धाराम जी की ऋषि के प्रति श्रद्धाः- लेखक महोदय को यह पता ही नहीं कि श्रद्धाराम लगभग चार वर्ष तक निरन्तर ऋषि दयानन्द का विरोध करता रहा। जितना अधिक विरोध किया उतना ही अधिक परास्त हुआ। ऋषि-दर्शन की प्यास भड़क उठी। उसने ऋषि से मिलना चाहा। **वह अपने गृह नगर फिलौर में आमन्त्रित करके ऋषि के प्रवचन करवाना चाहता था।** महोदय! आप अथवा कोई भी व्यक्ति इस का प्रमाण देखना चाहें तो अजमेर में होने वाले ऋषि मेला पर आयें। हम उन्हें इसका श्रद्धाराम जी के अपने शब्दों में दस्तावेजी प्रमाण दिखा देंगे। दु:ख का विषय यह है कि कुछ उच्च शिक्षित लोग अपनी डिग्रियों के अहं में पक्षपात की अन्धी गुफा से निकलना ही नहीं चाहते। सरकारी संस्थायें पूर्वाग्रह से इतनी ग्रसित हैं कि सत्य-इतिहास की खोज में एक तिनका भी तोड़ना नहीं चाहती।

आँखें खोलकर कुछ पढ़ लेते:- लेखक महोदय की पूरी पुस्तक का आधार साधु तुलसीदेव जी की 'श्रद्धा-प्रकाश' पुस्तक है। इस लेखक ने न जाने क्यों आँखें खोलकर उसे भी नहीं पढ़ा। पौराणिक आरती 'जय जगदीश हरे' के रचयिता के रूप में श्रद्धाराम जी को बहुत महिमा मण्डित किया है परन्तु इतना लिखने का नैतिक साहस ही न दिखा सके कि श्रद्धाराम मृत्यु से पहले घोर नास्तिक था। उसके मरणोपरान्त छपे उसके ग्रन्थ 'सत्यामृत प्रवाह' को बिना पढ़े उसकी वाह! वाह!! कर दी। इसी में उसने स्पष्ट रूप में ईश्वर की सत्ता का निषेध और अपने नास्तिक होने की घोषणा की है।

ऋषि की दिग्विजय:- लेखक ने आगे-आगे स्वामी दयानन्द तथा पीछे-पीछे पं. श्रद्धाराम को बताकर ऋषि की हार दिखाने का हास्यास्पद प्रयास किया है। सत्यामृत प्रवाह में श्रद्धाराम ने अष्टादश पुराणों को व्यास कृत नहीं माना। इन सबके लेखक पृथक्-पृथक् थे। यह क्या ऋषि दयानन्द जी की दिग्विजय नहीं थी? श्रद्धाराम जी ने केवल चार संहिताओं को ही वेद माना है। पौराणिकों के बाबा करपात्री भी कल तक ऐसा नहीं मानते थे। क्या श्रद्धाराम जी पर यह ऋषि का जादू नहीं था जो चार संहिताओं को ही वेद स्वीकार किया?

वैदिक सन्ध्या संस्कारविधि के प्रशंसक श्रद्धाराम:- लेखक महोदय उन लेखकों के अनुचर बन गये जिनको अपनी नाक के आगे कुछ दीखता तक नहीं। आप यह समझे बैठे हैं कि श्रद्धाराम जी ने ऋषि दयानन्द को भगा दिया। महोदय! आप ऋषि मेला पर अजमेर आयें हम श्रद्धाराम जी के हाथ से लिखे दस्तावेज के दर्शन आपको करवा देंगे। श्रद्धाराम तो महर्षि कृत संस्कारविधि तथा वैदिक सन्ध्या भी लोगों को सुनाकर स्वयं को तृप्त करने लग गया था। उसने ऋषि को स्वयं लिखा था, **''यदि आप भी उस समाज में होते तो आप मुझ को कंठ से लगा लेते।''**

लेखक महोदय से क्या यह आशा की जा सकती है कि वह सत्य को स्वीकार करके असत्य को छोड़ने का साहस दिखायेंगे? हम यह वाक्य किसी पुस्तक से आपको नहीं पढ़ायेंगे। श्रद्धाराम जी का हाथ से लिखा लेख दिखायेंगे।

हरिद्वार के कुम्भ मेला के पश्चात्:- हरिद्वार के सन् १८७९ के कुम्भ मेला तक तो श्रद्धाराम जी पूरे दलबल से ऋषि का विरोध करते रहे। यह हम मानते हैं और जानते हैं परन्तु अन्दर से हिल चुके थे। उनके हृदय में एक उथल-पुथल मची हुई थी। आपने नहीं लिखा हम बताये देते हैं कि हरिद्वार में तो श्रद्धाराम जी ने ऋषि के प्राणहरण का षड्यन्त्र भी रच रखा था। मृत्युञ्जय दयानन्द को श्रद्धाराम जी व उनके साथी वहाँ मरवा न सके। श्रद्धाराम जी को अपयश बहुत मिला।[२]

हृदय परिवर्तन की कहानी:- लेखक महोदय ने 'श्रद्धाप्रकाश' पढ़ कर श्रद्धाराम जी के आरम्भिक काल की कहानी तो पढ़ ली परन्तु अन्त समय की जो कहानी साधु तुलसीदेव जी ने अपनी पुस्तक में लिखी उसे या तो

समझ नहीं पाये या उसकी अनदेखी कर दी। आप अजमेर आयें हम आपको पं. श्रद्धाराम जी की अनकही कहानी उन्हीं के शब्दों में पढ़वा देंगे। हरिद्वार में जो अपयश मिला। उनके अपने चेले भोलानाथ जैसे भक्त जो उन्हें छोड़ गये तो लगता है कि इससे उनका हृदय परिवर्तन हो गया। पश्चात्ताप के अश्रुकण बहने लगे। अदूरदर्शी चेलों को देखते हुए भी कुछ नहीं दीख रहा था। दीखता होता तो 'सत्यामृत प्रवाह' को प्रकाशित ही न करवाते। इसके प्रकाश से लाभ क्या मिला? लाभ कुछ मिला तो ऋषि दयानन्द के मिशन को ही मिला।

सम्पूर्ण जीवन चरित्र पढ़ा होता:- लेखक को यह पता होना चाहिये कि पं. श्रद्धाराम जी के जीवन पर जिस गहराई से महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण जीवन चरित्र में प्रकाश डाला गया है उतना किसी भी और पुस्त्क में नहीं लिखा गया। लेखक ने इसे देखा ही नहीं फिर खोज क्या की? इस ग्रन्थ को पढ़ा होता तो अन्धकूप में न गिरते। साधु तुलसीदेव ने कभी मूर्तिपूजा की ही नहीं। न कभी घण्टी ही बजाई। लेखक को यह भी पता नहीं। यह क्या ऋषि का प्रभाव नहीं? शेष फिर।

कामनाओं की पूर्ति:- आज देश में मन्नते माँगने व मन्नतों को पूरा करवाने का बहुत अच्छा धन्धा चल रहा है। पढ़े-लिखे लोग भी अन्धविश्वासों की दलदल में फंसकर नदी-सरोवर के स्नान, पेड़ पूजा, कबर पूजा, कुत्ते-बिल्ली के आगे-पीछे घूमकर अपनी मनोकामनायें पूरी करवाने के लिए धक्के खा रहे हैं। जो सैंकड़ों वर्ष पूर्व कबरों में दबाये गये उनको अल्लाह मियाँ ने मनुष्यों के दु:ख-निवारण करने का मुखतार बना दिया है। मनुष्यों की इस दुर्बलता का शिकार आर्यसमाजी भी हो रहे। ऐसे अटार्नी जनरल आर्यसमाज में मनोकामनायें पूरी करवाने के नये-नये जाल फैला रहे हैं। कुछ सज्जनों का प्रश्न है कि किसी से कोई यज्ञ अनुष्ठान करवाने से मन्नत पूरी हो जाती है? कामनायें पूरी करने के लिए वेदानुसार क्या कर्म करने चाहिये?

अब हम इस प्रश्न का क्या उत्तर दें? परन्तु जब उच्च शिक्षित व्यक्ति व परिवार ऐसा प्रश्न उठायें तो कुछ समाधान करना प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है। हम महर्षि दयानन्द जी द्वारा इस प्रश्न का उत्तर पाठकों की सेवा में रखते हैं। सर्वकामनायें ऐसे ही पूर्ण होती हैं।

१. ''जिसके सुधरने से सब सुधरते, और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं। इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।''

२. फिर लिखा है, ''क्योंकि जो परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है, उसको जो कोई तोड़ेगा वह सुख कभी न पावेगा।''

३. ''जो कोई 'गुड़ मीठा है' ऐसा कहता है, उसको गुड़ प्राप्त वा उसको स्वाद प्राप्त कभी नहीं होता। और जो यत्न करता है, उसको शीघ्र वा विलम्ब से गुड़ मिल ही जाता है।''

४. ''जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है, उसको वैसा ही वर्त्तमान करना चाहिये।''

''अपने पुरुषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है।''

वेदोपदेश, आर्ष वचनों के प्रमाण तो हमने दे दिये पोंगापंथी टोटके और अनार्ष वचनों को हम जानते हैं परन्तु उनकी शव परीक्षा यहाँ नहीं करेंगे। धर्म-कर्म मर्म हमने ऋषि के शब्दों में दे दिया है। परोपकारी के प्रेमियों के स्नेह के हम आभारी हैं।

देशवासियो! **''टूट जाये न माला कहीं प्रेम की'':-** देश का दुर्भाग्य ही कहना चाहिये कि हमारे राजनेताओं का अपनी वाणी पर कतई संयम नहीं है। सब पार्टियों में ऐसे नेता हैं जो बहुत बोलकर अथवा असंयत अभद्र भाषा का प्रयोग करके राजनैतिक वातावरण को विषैला व प्रदूषित करते हैं। मानो ये लोग वैमनस्य फैलाने की ही खेती करते हैं। संघ के लोग पहले चुपचाप अपना काम करते थे अब 'शाखा युग' तो समाप्त हो गया। इन्होंने कई संस्थायें बनाकर अपने प्रचार तन्त्र को नया रूप दिया है। इनकी हर संस्था के प्रवक्ता टी.वी. पर बोलना चाहते हैं। एक दिन संघ परिवार के तीन प्रवक्ता एक कार्यक्रम में देख कर मुझे आश्चर्य हुआ। एक संघ की ओर से, एक विश्व हिन्दू परिषद् के नाम, एक तीसरी संस्था के नाम पर और चौथा भाजपा से भेजा भाई भी स्वयं सेवक था। सरकार को संकट में मत डालो।

समाज सेवा व समाज सुधार के काम करने की बजाये संघ नई सरकार को खींचने, दबाने व नचाने के लिए प्रत्येक विषय पर कुछ न कुछ प्रवचन करके वातावरण गर्माता रहता है। हिन्दुत्व पर एक सर्मन देकर बड़ा तीर मारा गया है। तर्क यह भी दिया गया कि फारसी भाषा में 'स' का 'ह' हो जाता है सो सिन्धु से हिन्दू बन गया। अरे भाई सिन्धु तो सिन्धु ही रहा। फ़ारसी भाषा में भी तो 'स' अक्षर पड़ा है। फ़ारसी भाषा का शब्द कोश तो मंगवा कर देखो। 'स' से अनेक धातु व असंख्य शब्द बनते हैं। तुम अपने गीता, रामायण, वेद, दर्शन, उपनिषद् से हिन्दू शब्द

का प्रमाण एक तो लाओ। हिन्दुत्व अन्य धर्मों को पचाने की शक्ति रखता है। यह बात सुनने में तो अच्छी लगती है। कोई प्रत्यक्ष प्रमाण तो दो। बादल ने एक धमकी देकर पंजाब से तुम्हारी राष्ट्रीय सिख संगत भगा दी। धर्माचार्य भी संघचालक बन गये और कहा यह जाता है कि हिन्दुत्व एक जीवन शैली है फिर अन्य धर्मों को पचाने का क्या अर्थ? अन्य धर्म हिन्दुत्व को कहाँ तक व कैसे अपनायेंगे और हिन्दू फिर क्या कबर पूजा, रोजे, नमाज, इफ़्तार, हज की रस्मों में भागीदार बनेंगे? देशभर में दो-चार लाख अन्तःप्रान्तीय और अन्तर्जातीय विवाह तो संघ करवा कर दिखाये। तिलक, मूर्त्तिपूजा, स्वामी विवेकानन्द की रट तो बहुत हो ली। इकबाल को राम मन्दिर के लिए उद्धृत करने लग गये। इकबाल ही ने तो लिखा है, तुम्हारे बुतखाने के बुत पुराने हो गये। कभी ईश्वर को तो सर्वव्यापक कहा नहीं। राम रग-रग में है- यह कथन एक संघी देवता का सुनकर दंग रह गया।

पाद टिप्पणी

१. द्रष्टव्य श्रद्धाराम फिल्लौरी, लेखक राजेन्द्र टोकी, पृष्ठ १४

२. द्रष्टव्य लाहौर के उर्दू मासिक 'विद्या प्रकाशक' की फाईल तथा 'सम्पूर्ण जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द' लेखक पं. लक्ष्मण जी तथा राजेन्द्र जिज्ञासु।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

प्रतिक्रिया

आपका सम्पादकीय सितम्बर प्रथम-२०१४ पढ़ा। यह लेख पढ़ने से लगा कि इस में स्वस्थ समाज के सर्जन की सारे बीज मूलरूप में निर्देशित हैं। वैसे इस लेख का शिर्षक ही 'स्वस्थ समाज का सर्जन' होना चाहिए, क्योंकि इस शिर्षक से हमारे ब्रह्मचारी वर्ग नाराज हो सकते हैं, वैसे इस लेख में ब्रह्मचारियों, संन्यासियों का अनादर हो ऐसा बिल्कुल नहीं है।

स्वस्थ समाज सर्जन के लिये इस दिशा में प्रयास होने चाहिए। जैसे फिल्म बनाने के लिये प्रोडूयसर, डाईरेक्टर अच्छे-अच्छे युवक-युवतियों को चुनते हैं और किसान अच्छे-अच्छे बीज चुनकर अगले वर्ष के लिये रखता है। इसी प्रकार हमें यदि स्वस्थ, भव्य और दिव्य समाज का निर्माण करना है तो इस लेख में निर्देशित बिन्दुओं के अनुसार प्रयास करने चाहिए।

- डॉ. बी.एम. महेत्रे, हैदराबाद

पुस्तक - परिचय

पुस्तक का नाम - सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी
संकलन कर्त्ता - श्री कन्हैयालाल आर्य
प्रकाशक - सत्य धर्म प्रकाशन, रेवाड़ी रोड, गुरुकुल झज्जर, जि. झज्जर, हरियाणा
सम्पादन - श्री डॉ. सुरेन्द्र कुमार, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
मूल्य - १८०/- **पृष्ठ संख्या** - ३५३

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश ऐसा अमूल्य ग्रन्थ है जो यथा नाम तथा गुण के साथ अनेक विशेषताओं को लिए हुए है। जिसने भी अध्ययन किया है उनकी आँखे खुल गईं। अन्धकार का साम्राज्य जर्जर होकर पुरानी दीवार की तरह ढह कर नष्ट हो गया। सत्य की परख खरी है। सत्यमेव जयते, आंग्ल भाषा में भी कहा है 'Truth is ever green' वही बात सत्यार्थप्रकाश के पठन-पाठन से सिद्ध होती है। यह ग्रन्थ समाज सुधार का प्रेरक है। व्यक्ति इसके संसर्ग में आता है तो उसको सत्य दिशा का बोध होता है और आवाज बुलन्द होती है कि मैं अन्धेरे कूप में गोते लगा रहा था आज ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हुआ है।

आज धर्म के नाम पर नाना प्रकार का आडम्बर चल रहा है। भोलीभाली, शिक्षित, अशिक्षित सभी इस धारा के शिकार हो रहे हैं। पाखण्डियों का साम्राज्यवाद बढ़ता जा रहा है। नाना प्रकार सम्प्रदाय, भगवानों का बोलबाला बढ़ रहा है। लोग लकीर के फकीर बनते जा रहे हैं उनकी सोच कहाँ जा रही है। बालक, युवा, वृद्ध, महिलाओं में अन्धविश्वास घर करता जा रहा है उसे दूर करने के लिए सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी की अति आवश्यकता एवं समय की पुकार भी ऐसे अवसर पर श्री कन्हैयालाल जी आर्य ने अपने परिश्रम से यह पुस्तक समाज को प्रदान की है वास्तव में यह उपयोगी सिद्ध होगी। सत्य का मर्म समझने में सार्थक होगी। प्रश्न सरल स्वामी दयानन्द जी के कथनानुसार अतिश्रम से तैयार किये हैं उनका साधुवाद है। पुस्तक का कागज, आवरण आकर्षक है। सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी सभी समुदाय, वर्गों के लिए हितकर सिद्ध होगी। विशेषकर युवा वर्ग, विद्यालयों के लिए ज्ञान, सत्य की प्राप्ति हेतु अनुपम पुस्तक सिद्ध होगी। सभी पाठक अवश्य लाभान्वित हों तभी लेखक व सम्पादक की सफलता है। इसके लिए संकलनकर्त्ता का आभार।

- देवमुनि, पुष्कर मार्ग, अजमेर

दक्षिण भारत में बलिदान परम्परा के पच्चहत्तर वर्ष

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऋषि के बलिदान समारोह के अवसर पर दक्षिण भारत में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करते हुए जिन हुतात्माओं ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया, उनका पुण्य स्मरण किया जायेगा।

दक्षिण भारत में निजाम के अत्याचारों की भट्टी में जो शहीद हुए उनमें प्रमुख हैं-

श्री भीमराव पटेल, माता गोदावरी देवी, श्री कृष्णराव विकेकर, श्री काशीनाथ धारूर, श्री गोविन्द राव घाडेलाली इन सभी को जिन्दा जलाया गया। अनेकों का जेल में बलिदान हुआ, इनमें भाई श्यामलाल जी, श्री धर्मप्रकाश जी, आर्यनेता पं. नरेन्द्र जी आदि प्रमुख थे, इन महानुभावों का इस अवसर पर पुण्य स्मरण किया जायेगा। परोपकारी में इन बलिदानियों के संस्मरण प्रकाशित होंगे।

सभी आर्यजनों से निवेदन है कि अपनी-अपनी समाजों में, आर्यसमाज के इतिहास व बलिदानी वीरों की साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर चर्चा करें। अपने इतिहास बलिदानों का स्मरण रखने वाला समाज ही अपने को जीवित रख पाता है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१२ से १९ अक्टूबर, २०१४- **योग-साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर),**
सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

ऋषि मेला - ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

– ब्र. राजेन्द्रार्यः

वैदिक संस्कृति में मानव निर्माण के लिए सोलह संस्कारों का विधान है। सन्तानों के विद्या अध्ययन की समाप्ति पर आचार्य कुल में ही समावर्तन संस्कार सम्पन्न होता है। समावर्तन संस्कार के पश्चात् विद्यार्थी को अपने पितृकुल में जाना होता है। पितृकुल की दिनचर्या एवं वातावरण आचार्यकुल अर्थात् गुरुकुल की दिनचर्या एवम् अनुशासन आदि से सर्वथा भिन्न रहता है। इसलिए समावर्तन संस्कार अर्थात् आजकल की शिक्षा पद्धति के अनुसार दीक्षान्त समारोह के समय आचार्य द्वारा शिष्य को सदुपदेश दिया जाता है, जिससे कि वह अपने व्यावहारिक जीवन में शिक्षा को क्रियान्वित कर सके। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने वैचारिक क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में तैत्तिरीय उपनिषद् शिक्षा. ११/१ के इसी प्रकरण को उद्धृत करते हुए लिखते हैं-

वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्य्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्य्याभ्यां न प्रमदितव्यम्।।१।।

आचार्य अन्तेवासी अर्थात् अपने शिष्य और शिष्याओं को इस प्रकार उपदेश करे कि- तू सदा सत्य बोल, धर्माचार कर, प्रमाद रहित होकर पढ़-पढ़ा, पूर्ण ब्रह्मचर्य से समस्त विद्याओं को ग्रहण कर और आचार्य के लिए प्रिय धन देकर विवाह करके सन्तानोत्पत्ति कर। प्रमाद से सत्य को कभी मत छोड़, प्रमाद से धर्म का त्याग मत कर। प्रमाद से आरोग्य और चतुराई को मत छोड़, प्रमाद से उत्तम ऐश्वर्य की वृद्धि को मत छोड़। प्रमाद से पढ़ने और पढ़ाने को कभी मत छोड़। इस उपदेश के अन्तर्गत आचार्य ने अपने शिष्य और शिष्याओं को स्वाध्याय के प्रति सचेत रहने के लिए निर्देश दिया है क्योंकि वैदिक साहित्य में स्वाध्याय हमारी दिनचर्या का प्रमुख अङ्ग है। महर्षि मनु महाराज ने कहा है-

वेदोपकरणे चैव स्वाध्याये चैव नैत्यके।
नानुरोधोऽस्त्यनध्याये होममन्त्रेषु चैव हि।।

–मनुस्मृति २/१०५

वेद के पठन-पाठन में और नित्यकर्म में आने वाले गायत्री जप या सन्ध्योपासना में तथा यज्ञ करने में अनध्याय का विचार या आग्रह नहीं होता अर्थात् इन्हें प्रत्येक स्थिति में करना चाहिए, इनके साथ अनध्याय का विचार लागू नहीं होता। क्योंकि 'स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन्' अर्थात् स्वाध्याय से ही ऋषियों की अर्चना या पूजा होती है।

ईश्वरीय ज्ञान वेद में मनुष्यों के लिए कहा गया है-

यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः सम्भृतं रसम्।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना।।

–ऋग्वेद ९/६७/३१

जो सबको पवित्र करने वाली, ईश्वर प्रदत्त और ऋषियों द्वारा संचित ऋचाओं का अध्ययन करता है, वह पवित्र आनन्द रस का पान करता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती इसी बात को अपने ढंग से सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास में लिखते हैं-

'आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना।'

संसार के महान् वैज्ञानिक सर आइजक न्यूटन का कथन है कि- 'ज्ञान का अपार सागर मेरे सामने वह रहा है और मैं उसके तट पर केवल कंकड़ियाँ ही चुन रहा हूँ।'

जिस स्वाध्याय के सन्दर्भ में भगवती श्रुति (=वेद) मनुस्मृति, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ, दर्शनशास्त्र आदि ग्रन्थों में महिमा का गान किया गया है, उस 'स्वाध्याय' शब्द का अर्थ व लाभ आदि हमें भली भाँति जानना चाहिए। जिससे स्वाध्याय के प्रति रुचि पैदा हो। स्वाध्याय शब्द सु+आङ्+अधि पूर्वक 'इङ्' धातु से 'इङश्च' (अष्टाध्यायी ३/३/२१) इस पाणिनीय सूत्र से घञ् प्रत्यय करने पर बनता है। 'सुष्ठु' **'आवृत्य अध्ययनं स्वाध्यायः। स्वयमध्ययनं स्वाध्यायः।'** भली भाँति आवृत्तिपूर्वक अध्ययन करना या अपने लिए अथवा स्वयं अध्ययन करना। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में 'ब्रह्मयज्ञ' के अन्तर्गत स्वाध्याय को भी सम्मिलित किया है-

(क) तत्र ब्रह्मयज्ञस्यायं प्रकारः साङ्गानां वेदादिशास्त्राणां सम्यगध्ययनमध्यापनं सन्ध्योपासनं च।

- (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, पञ्चमहायज्ञविषय)

(ख) 'ब्रह्मयज्ञ' जो पढ़ना-पढ़ाना, ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना करना।

–सत्यार्थप्रकाश, तृतीय समुल्लास

मोनियर विलियम्स ने अपनी प्रसिद्ध संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी में 'ब्रह्मयज्ञ' शब्द पर निम्न प्रकार लिखा है-

Recitation of portions of the Veda and sacred books at the Sandhya (सन्ध्या).

अर्थात् 'सन्ध्या' में वेद तथा वैदिक साहित्य के भागों का उच्चारण करना ब्रह्मयज्ञ है।

महर्षि पतञ्जलि प्रणीत योगदर्शन के (२/१ तथा २/३२ सूत्रों) के व्यास भाष्य में स्वाध्याय शब्द का अर्थ महर्षि व्यास ने इस प्रकार किया है-

- **'स्वाध्यायः प्रणवादि पवित्राणां जपो मोक्षशास्त्राध्ययनं वा।'**

-योगदर्शन २/१, व्यासभाष्ये

अर्थात् ओ३म् आदि पवित्रकारक वचनों तथा मन्त्रों का जप करना और मोक्ष का उपदेश करने वाले शास्त्रों का पढ़ना।

- **'स्वाध्यायो मोक्षशास्त्राणामध्ययनं प्रणवजपो वा।'**

-योग दर्शन २/३२, व्यास भाष्ये

अर्थात् मोक्ष का उपदेश करने वाले योग दर्शनादि शास्त्रों का अध्ययन करना और प्रणव=ओ३म् का जप करना स्वाध्याय कहलाता है।

चारों आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास) के लोगों के लिए ब्रह्मयज्ञ अनिवार्य है। इस प्रकार से वेदों एवं आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय करना सभी के लिए अनिवार्य हुआ। मानव जीवन के चार पुरुषार्थ हैं- धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष। छान्दोग्य उपनिषद् में धर्म के तीन स्कन्ध बतलाये गये हैं-

'त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति प्रथमः।'

-छान्दोग्य उपनिषद् २/२३/१

१. यज्ञ २. स्वाध्याय ३. दान।

स्वाध्याय के द्वारा मनुष्य श्रेष्ठ गुणों वाला बनता है। स्वाध्याय के द्वारा ही मनुष्य अपनी अविद्या को हटाकर मोक्ष प्राप्त करता है। छान्दोग्य उपनिषद् में स्वाध्याय से मोक्ष मिलता है, ऐसा लिखा है-

आचार्यकुलाद्वेदमधीत्य, यथाविधानं गुरोः कर्मातिशेषेणाभिसमावृत्य, कुटुम्बे शुचौ देशे स्वाध्यायमधीयानो धार्मिकान्विदधदात्मनि सर्वेन्द्रियाणि सम्प्रतिष्ठाप्यहिंसन्त्सर्वभूतानि अन्यत्र तीर्थेभ्यः, स खल्वेवं वर्तयन्यावदायुषं, ब्रह्मलोकमभिसम्पद्यते।

-छान्दोग्य उपनिषद् ८/१५/१

आचार्यकुल से वेदों को पढ़कर गुरु की दक्षिणा को देकर समावर्तन द्वारा लौटकर, कुटुम्ब में स्वाध्याय में रहकर और धार्मिक विद्वानों के सत्संग में सब इन्द्रियों को वश में करके, अहिंसा-बुद्धि से सब प्राणियों को देखता हुआ आयुपर्यन्त इस प्रकार का व्यवहार करता हुआ विद्वान् ही ब्रह्मलोक अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करता है।

महर्षि पतञ्जलि के योगसूत्र (२/४४)- **'स्वाध्यायादिष्टदेवता संप्रयोगः।'** का भाष्य करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के उपासना विषय के अन्तर्गत लिखते हैं- ''स्वाध्याय से इष्टदेवता अर्थात् परमात्मा के साथ सम्प्रयोग अर्थात् साझा होता है। फिर परमेश्वर के अनुग्रह का सहाय अपने आत्मा की शुद्धि, सत्याचरण, पुरुषार्थ और प्रेम के सम्प्रयोग से जीव शीघ्र ही मुक्ति को प्राप्त होता है।''

योगदर्शन के सूत्र १/२८ व्यास भाष्य में समन्वय करते हुए स्वाध्याय के विषय में कहा गया है-

स्वाध्यायाद् योगमासीत योगात्स्वाध्यायमामनेत्।
स्वाध्याययोगसम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते।।

स्वाध्याय अर्थात् पवित्र 'ओ३म्' के जप करने तथा मोक्ष का उपदेश करने वाले शास्त्रों के पढ़ने से योग=चित्तवृत्ति निरोध करके उपासना करे और योग=चित्त वृत्ति के निरोध से स्वाध्याय=ओ३म् के जप का अभ्यास करे। इस स्वाध्याय और योग की सिद्धि से अन्तरात्मा में परमात्मा का प्रकाश हो जाता है।

शतपथ ब्राह्मण के प्रणेता याज्ञवल्क्य ऋषि ने स्वाध्याय के निम्नलिखित लाभ बतलाये हैं-

''अथातः स्वाध्याय-प्रशंसा। प्रिये स्वाध्याय-प्रवचने भवतो, युक्तमना भवति, अपराधीनोऽहर-हरर्थान्साधयते, सुखं स्वपिति, परमचिकित्सक आत्मनो भवति, इन्द्रियसंयमश्चैकारामता च प्रज्ञावृद्धिर्यशो लोकपक्तिः, प्रज्ञा वर्धमाना चतुरो धर्मान् ब्राह्मणमभि-निष्पादयति। ब्राह्मण्यं, प्रतिरूपचर्या, यशो लोकपक्तिं, लोकः पच्यमानश्चतुर्भिधर्मैर्ब्राह्मणं भुनक्ति, अर्चया च दानेन चाज्येयतया चावध्यतया च।''

-शतपथ ब्राह्मण ११/५/७/१

अर्थात् स्वाध्याय की प्रशंसा-स्वाध्याय और प्रवचन (पढ़ाना) प्रिय होते हैं। वह मननशील, स्वाधीन हो जाता है, प्रतिदिन धन कमाता है, सुख से सोता है, अपना परम चिकित्सक है। उसकी इन्द्रियाँ संयम में रहती हैं, एकरस रहता है, उसकी प्रज्ञा बढ़ती है, यश बढ़ता है और उसके लोग उन्नति करते हैं। प्रज्ञा के बढ़ने से ब्राह्मण सम्बन्धी चार धर्मों को जानता है अर्थात् ब्रह्मकुल की नीति, अनुकूल आचरण, यश और स्वजन वृद्धि। स्वजन वृद्ध होकर ब्राह्मण को चार धर्मों से युक्त करते हैं अर्थात् सत्कार, दान, कोई

उसको सताता नहीं, कोई उसको मारता नहीं।

तैत्तिरीय उपनिषद् के शिक्षाध्याय के नवम अनुवाक में स्वाध्याय और प्रवचन की महिमा में जो कुछ लिखा है, उससे भी यह ज्ञात होता है कि स्वाध्याय-प्रवचनकर्त्ता को किन महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए। इस नवम अनुवाक में 'स्वाध्याय-प्रवचने च' की बारह बार आवृत्ति हुई है। वहाँ हर आवृत्ति में एक न एक तत्त्व को साथ संलग्न कर दिया गया है, यथा-

ऋतञ्च स्वाध्याय-प्रवचने च। सत्यञ्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
तपश्च स्वाध्याय-प्रवचने च। दमश्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
शमश्च स्वाध्याय-प्रवचने च। अग्नयश्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
अग्निहोत्रञ्च स्वाध्याय-प्रवचने च। अतिथयश्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
मानुषञ्च स्वाध्याय-प्रवचने च। प्रजा च स्वाध्याय-प्रवचने च।
प्रजनश्च स्वाध्याय-प्रवचने च। प्रजातिश्च स्वाध्याय-प्रवचने च।

यहाँ ऋत, सत्य, तप, दम, शम आदि गुणों को स्वाध्याय और प्रवचन के साथ जोड़ने के दो उद्देश्य हैं। प्रथम तो यह कि ऋत, सत्य, तप आदि करते हुए स्वाध्याय और प्रवचन करे। दूसरे यह कि स्वाध्याय और प्रवचन करते हुए ऋत, सत्य, तप, शम, दम आदि नियमों को जाने। जहाँ ऋत, सत्य, तप आदि को स्वाध्याय का साधन बनाए, वहाँ स्वाध्याय का साध्य भी इन्हें ही बनाए। स्वाध्याय का फल ऋत की खोज हो, इत्यादि। स्वाध्याय से ऋत नियमों को जाने, स्वाध्याय से सत्य नियमों को जाने। पठन-पाठन का एकमात्र उद्देश्य यही है कि इस विश्व में जितने भी ऋत, सत्य, तप, दम आदि नियम हैं, उनको जाने और उनके ज्ञान से स्वाध्याय को परिष्कृत करे।

यदि कोई व्यक्ति ब्राह्मणत्व प्राप्त करना चाहे, तो उसके लिए विहित अनेक साधनों में प्राथमिकता स्वाध्याय को ही दी जाती है-

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनु।।

-मनुस्मृति २/२८

अर्थात् पढ़ने-पढ़ाने, विचार करने-कराने, नानाविध होम के अनुष्ठान, सम्पूर्ण वेदों को शब्द, अर्थ, सम्बन्ध, स्वरोच्चारण सहित पढ़ने-पढ़ाने, पौर्णमासी इष्टि आदि के करने, विधिपूर्वक धर्म से सन्तानोत्पत्ति, पञ्चमहायज्ञों (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ और अतिथि यज्ञ), अग्निष्टोमादि यज्ञ, विद्वानों का संग, सत्कार, सत्य भाषण, परोपकारादि सत्कर्म और सम्पूर्ण शिल्पविद्यादि पढ़ के दुष्टाचार छोड़ श्रेष्ठाचार में वर्त्तने से यह शरीर ब्राह्मण का किया जाता है। स्वाध्याय का परित्याग ब्राह्मण को कभी नहीं करना चाहिए। महर्षि मनु लिखते हैं-

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः।।

-मनुस्मृति २/१६८

अर्थात् जो द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) वेद का स्वाध्याय-श्रम न करके अन्यत्र श्रम में जा लगता है, वह बहुत शीघ्र ही शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है। स्वाध्याय के द्वारा एक साधारण व्यक्ति महान् बन सकता है। स्वाध्याय के द्वारा अनेक व्यक्ति उच्चकोटि के विद्वान् बन गये। इतिहास में हमें ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं-

बरमौण्ट (अमेरिका) में एक मोची था। नाम था चार्ल्स सी फ्रास्ट। उसने अपने कार्य के व्यस्त क्षणों से प्रतिदिन एक घण्टा बचाकर दस वर्ष तक नियमपूर्वक गणित का अध्ययन किया। केवल एक घण्टा प्रतिदिन स्वाध्याय करने के आधार पर वह दस वर्ष में ही उच्चकोटि का गणितज्ञ बन गया। आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं. क्षेमकरण दास जी ने ५५ वर्ष की अवस्था में संस्कृत पढ़ना आरम्भ करके अथर्ववेद पर भाष्य किया।

अनार्ष ग्रन्थों, गन्दे तथा भद्दे उपन्यास और नाटक, समाचार पत्र-पत्रिकायें आदि पढ़ने का नाम स्वाध्याय नहीं है। इनसे मनुष्य का कल्याण नहीं होता, अपितु पतन होता है। जीवन पवित्र करने वाले, आत्मा का कल्याण करने वाले ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए। संसार के महापुरुषों के व वैज्ञानिकों के जीवन चरित्र को पढ़ना चाहिए। वेद, उपनिषद्, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रन्थ, दर्शनशास्त्र, रामायण, महाभारत आदि आत्मिक उन्नति के ग्रन्थों का स्वाध्याय करना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रस्थानत्रयी (सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका व संस्कारविधि), आर्याभिविनय, व्यवहारभानु आदि ग्रन्थों के स्वाध्याय से आत्मोन्नति होती है।

स्वाध्याय परम श्रम है। स्वाध्याय परम तप है। स्वाध्याय परम धर्म आदि है। इसलिये स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए- **'तस्मात् स्वाध्यायोऽध्येतव्यः।'**

(शतपथ ब्राह्मण ११/५/७/३)

मनु महाराज का भी कथन है कि मनुष्यों को सर्वदा आलस्य-रहित होकर, यथावसर वेद ही को पढ़ना चाहिए क्योंकि यह द्विज का परमधर्म है और दूसरे धर्म इससे नीचे हैं।

वेदमेवाभ्यसेन्नित्यं यथाकालमतन्द्रितः।
तं ह्यस्याहुः परं धर्ममुपधर्मोऽन्य उच्यते।

-मनुस्मृति ४/१४७

- आर्यसमाज शक्तिनगर, सोनभद्र-२३१२२२
(उ.प्र.) चलभाष-०९४५०९५१९४६

यहाँ के बाबाओं के नाम

– मोहन लाल तंवर

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर जितना कुठाराघात आज हो रहा है उससे विदित होता है कि पाखण्ड के विरुद्ध जो भी बोलता है उसे धार्मिक भावनाओं का हन्ता मान लिया जाता है। भारतीय वाङ्मय के अन्तर्गत दर्शन, तर्कशास्त्र, विज्ञान आदि विषय आते हैं। यदि किसी परम्परा का कोई विरोध करे तो आज कल के बुद्धिजीवी उस व्यक्ति को धर्म का शत्रु मान लेते हैं। ये लोग पाखंड खण्डनकर्त्ता को मानवता का शत्रु मानते हैं। इनकी दृष्टि में गणेश प्रतिमा को दूध पिलाने वाले लोग आस्तिक हैं और इस पाखण्ड की आलोचना करने वाले नास्तिक। जयपुर जिले के आमेर स्थित शिला देवी को जब मानव बलि से पूजा जाता था तो इसे पाखंडी लोग बहुत अच्छा मानते थे, इसके विरोध के पश्चात् नरबलि तो समाप्त हो गई परन्तु भैंसे, बकरों की बलि प्रारम्भ हो गई, तो लोगों ने उड़ा दिया कि माता शिला देवी को पुजारियों से घृणा हो गई और उसने अपना मुंह टेढ़ा कर लिया, जो आज तक भी टेढ़ा ही है। धर्म के नाम पर इस प्रकार की विडंबना न केवल भारत में ही है बल्कि पूरी दुनियाँ में है।

कुछ दिन पूर्व द्वारिका-शारदा पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द ने कुछ ऐसे बयान दिए कि सांई बाबा का पूजन रामभक्तों को नहीं करना चाहिए क्योंकि न तो वे भगवान के अवतार थे, न ही वे हिन्दु-मुस्लिम एकता के प्रतीक थे। सिरड़ी के सांई मन्दिर में करोड़ों का चढावा आता है और लाखों व्यक्ति उनकी पूजा करते हैं। परन्तु उनकी उपलब्धि क्या है, इस बात को कोई नहीं जानता। सांई बाबा के उपासकों की मनोकामना में न तो मानवता के उद्धार की भावना होती है, न वे सद्बुद्धि, सदाचार, तप, त्याग, संयम की कामना सांई बाबा से करते हैं, उनकी कामनाओं के अन्तर्गत धन-दौलत, यश, लाभ, फिल्म की सफलता आदि भौतिक एषणायें होती हैं। सांई बाबा को रामानन्द अथवा कबीर की परम्पराओं का निर्वाहक माना जाता है, यह बात भी ठीक नहीं, स्वामी रामानन्द बहुत विद्वान् एवं तपस्वी थे, कबीर पाखण्डों पर घोर आघात करने वाले गलत परम्पराओं के घोर आलोचक, अच्छे उपदेशक ईश्वरभक्त और एक उत्कृष्ट कवि थे। इसके विपरीत सांई बाबा को चमत्कारी पुरुष पानी से दीपक जलाने वाले, दूर से पत्थर और पास से सांई दिखने वाले भगवान माना जाता रहा और संभवत: इन्हीं चमत्कारों के कारण वे भगवान की श्रेणी में शुमार कर लिए गये। इससे अच्छे चमत्कार तो जादूगर सरकार दिखाता था, अन्तर केवल यही है कि वह साधु नहीं था और इन ऐन्द्रजालिक बातों को हाथ की सफाई मानता था, परन्तु यही चमत्कार साधु द्वारा किये जाते हैं तो उसे भगवान का दर्जा दे दिया जाता है।

भीड़ का न तो कोई धर्म होता है और न ही कोई दर्शन। भीड़ तो भीड़ होती है। भेड़ का कोई लक्ष्य नहीं होता, एक के पीछे एक चलती रहती है, चाहे सामने कुआ हो अथवा खाई। आज कोई पाखण्ड और अन्धविश्वास के विरुद्ध बोलता है तो उसकी सभा में दो-ढ़ाई सौ पांच सौ या अधिक से अधिक एक हजार व्यक्ति ही जुड़ते हैं। कोई नेता या मन्त्री की सभा में दस-बीस हजार व्यक्ति आ जाते हैं और जब कोई अमिताभ, शाहरुख, कैटरीना कैफ कहीं आ जाते हैं तो भीड़ लाखों तक पहुँच जाती है। इन फिल्मी हस्तियों से इस भीड़ को क्या प्राप्त होता है और कोई समाज सुधारक, धार्मिक व्यक्ति इन से क्या छीन लेता है। अत: यह व्यर्थ की बात है कि आसाराम, सांई बाबा के असंख्य अनुयायी हैं और गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनि, व्यास, दयानन्द के कम। ये हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं, दयानन्द और उनके विचार धारा के व्यक्ति भारतीय संस्कृति के उन्नायक हैं और अन्धकार के विरुद्ध लिखने वाले सृजक संस्कृति की अजस्त्र धारा को गतिमान रख रहे हैं।

सम्भवतया सांई बाबा के जीवन काल में कोई चमत्कार नहीं हुआ हो क्योंकि वे एक साधारण फकीर थे और भिक्षा पर अपना जीवन यापन करते थे परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् उनका सम्बन्ध चमत्कारों से साथ जोड़ दिया गया हो क्योंकि कबीर जिन अन्धविश्वासों का घोर विरोध करते थे, उनकी मृत्यु के पश्चात् पाखण्डियों ने उन्हीं मूर्खतापूर्ण बातों का प्रचार किया। उनकी मृत्यु हुई तब हिन्दु जनता उनका दाह संस्कार करना चाहती थी और

मुसलमान उनको सुपुर्देखाक (दफनाना) चाहते थे। जब लाश से कफन उठाया तो सुनते हैं उसके नीचे कबीर का शव न होकर के कुछ फूल थे जिन्हें मुसलमान और हिन्दुओं ने परस्पर बांट कर हिन्दुओं ने उन्हें जला दिया तथा मुसलमानों ने गाड़ दिया। मूर्ति भंजक कबीर की आज विशालकाय मूर्तियाँ कबीर मठों में स्थापित कर के उनकी पूजा, आरती और अनुष्ठान किया जा रहा है। देवता तुल्य परमपूज्य मानव मात्र के उद्धारक गुरुनानक देव जो सतत् कुरीतियों और पाखण्डों के विरुद्ध बोलते थे, उनकी मृत्यु के पश्चात् उनको चमत्कार से जोड़ दिया गया।

मैं तथाकथित इन धर्मनिरपेक्ष और अपने आपको बहुत बड़ा मानवीय भावनाओं का रक्षक मानते हैं, उनसे पूछना चाहता हूँ कि आज कबीर, नानक, दयानन्द होते तो इन व्यर्थ की बातों से उनका हृदय नहीं दु:खी होता? क्या भीड़ की श्रद्धा का ही पक्ष लिया जाना जरूरी है? क्या सत्यान्वेषी, ऋषि-मुनियों, समाज सुधारकों, वैज्ञानिकों, मनस्वियों को कूड़ेदान में फेंक दिया जावे?

हिन्दु, मुस्लिम एकता की बातें करने वाले अच्छे तो लगते हैं परन्तु ताली एक हाथ से नहीं बजा करती। इस्लाम को न मानने वाले को काफिर कहना और क्रिकेट के मैच में पाकिस्तान की विजय पर आतिशबाजी करने वालों से धार्मिक सहिष्णुता की बात करना, रेत में से तेल निकालने के समान है। इन्हें न निजामुद्दीन औलिया, न मुईनुद्दीन चिश्ती और न कोई कबीर-सांई एक कर सकता है। इनके मस्तिष्क में से जब तक गौरी, बाबर, औरंगजेब नहीं निकलेंगे तब तक भारतीय संस्कृति और संस्कार इन्हें पराये व काफिरों के चोंचले लगेंगे।

आज समाचार पत्रों के कॉलम लेखक भी सांई बाबा के पक्ष में अपने तर्क देकर यह सिद्ध करना चाह रहे हैं कि शंकराचार्य गलत हैं और सांई के चेले सही हैं। राजनेता भी इसे हवा देकर अपने धर्मनिरपेक्ष होने का डंका पीट रहे हैं। उन्हें यह ज्ञात नहीं व्यक्ति पूजा ने इस देश को पलायनवादी और कर्महीन बना दिया है। छोटे-छोटे कष्टों को लेकर आज हम इन तथाकथित बाबाओं की शरण में पलायन कर जाते हैं और पुरुषार्थ को प्रेरणा देने वाली गीता और उपनिषदों का तिरस्कार करते हैं। क्या हमारे ऋषि-मुनियों की हजारों वर्षों की तपस्या से निकले सार का यही अर्थ है कि हम प्रकाश के स्थान पर अन्धकार की पूजा करे? सत्य को ग्रहण करने के स्थान पर झूठ और पाखण्ड के नर्क कुण्ड में पड़े रहे? क्या हमारे ऋषि मुनियों के वेद, दर्शन, उपनिषद् व्यर्थ हो गये? क्या हमारा ज्योतिष, भूगोल, अध्यात्म विज्ञान व्यर्थ हो गया? क्या हम इन बाबाओं, अघोरियों, तांत्रिकों, झूठे चमत्कार करने वालों के अन्धभक्त बनकर भारतीय ऋषियों की महान उपलब्धियों को तिलांजली दे दें? भारत के लोगों इस पर चिन्तन मनन करो। अपनी आत्मा को टटोलो। आप आत्मा को जागृत करेंगे तो वहाँ आपको प्रकाश का आभास होगा और इस प्रकाश को खोज लिया तो आप सत्य के मार्ग का कभी त्याग नहीं करोगे।

इन बाबाओं के भक्तों की अब चिन्ता नहीं है। इनकी आंखों पर तो जो अन्धभक्ति का चश्मा चढ़ गया वह न तो कोई शंकराचार्य उतार सकता है और न ही कोई प्रगतिशील संघ का नेता। चिन्ता तो उस पीढ़ी की है जो अपने माता-पिता के द्वारा प्रदत्त आस्था का पालन कर एक चेतना विहीन समाज का निर्माण करेगी और इस मकड़जाल में अपने मित्रों और सहयोगियों को जकड़ेगी। इस पीढ़ी के युवा नई सोच को अपने नजदीक फटकने भी नहीं देंगे और लकीर के फकीर बनकर युगों से चली आ रही भारतीय मनीषा को तिलांजली दे देंगे। या जिनके गले यह तथाकथित धर्म नहीं उतरा तो वे अनीश्वरवादी बनकर भारतीय परम्परा धर्म, दर्शन, अध्यात्म का मजाक बनायेंगे, कहने का अर्थ है दोनों प्रकार की विचारधाराओं के युवक अन्ततोगत्वा भारतीय संस्कृति के ही विरोधी बनेंगे।

अब यहाँ आर्य समाज की क्या भूमिका रहेगी? क्या वह भी यथास्थितिवादी रहकर इन ढ़कोसलों की तरफ से आँख बन्द कर लेगा अथवा एक मिशनरी की भावना को लेकर इस अन्धेरे के विरुद्ध लड़ेगा। आर्य नेताओं में आज भी लेखराम, चमूपति, गुरुदत्त, श्रद्धानन्द आदि की उर्जा शेष है। आज भी आर्य समाज के पास अच्छे विद्वान्, वक्ता एवं तार्किक व्यक्ति है जो वैदिक संस्कृति को इसके पूर्वरूप में स्थापित कर सकते हैं, इसके लिये भले ही हमें कितना ही संकीर्ण साम्प्रदायिक, धार्मिक द्वेष फैलाने वाले क्यों न कहा जाय, हमें तो ऋषि ऋण उतारना ही होगा।

- ई-२०७, शास्त्री नगर, अजमेर।

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)	
१.	ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	रु. ५००.००
२.	"यजुर्वेद संहिता"(मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१८०.००
३.	यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण)	१००.००
४.	सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	८०.००
५.	अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	३५०.००
६.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
७.	सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका	२.००
८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द	१००.००
९.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००
	वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)	
१०.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१५०.००
११.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
१४.	ऋग्वेदभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	२५०.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	६०.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१७.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१८.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल प्रथम भाग सजिल्द	७०.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	६०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
२०.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल पहला भाग सजिल्द	
२१.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल दूसरा भाग सजिल्द	
२२.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	१५०.००
२३.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द	
२४.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२५.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	९०.००
२६.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
२७.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५०.००
२८.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२५०.००
२९.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
	वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)	
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	२५.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	३०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३०.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग) सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द)	२५.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
४१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द)	
४२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द)	
४३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४५.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१००.००
४६.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३७५.००
	स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड	
४७.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४८.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	४००.००
४९.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट	
	विविध	
५०.	गोकरुणानिधि (बढ़िया)	५.००
५१.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	५.००
५२.	स्वीकारपत्र	३.००
५३.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	५.००
	सिद्धान्त ग्रन्थ	
५४.	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	१२०.००
५५.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द)	१०.००
५६.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द)	७.००
५७.	आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द)	७.००
	कर्मकाण्डीय	
५८.	वैदिक नित्यकर्मविधि	२५.००
५९.	पञ्चमहायज्ञविधि	१२.००
६०.	विवाह–पद्धति	२०.००
६१.	संस्कारविधि (सजिल्द)	७०.००
६२.	हवनमन्त्राः (बड़ा आकार)	५.००
	पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ	
६३.	अनुभ्रमोच्छेदन	
६४.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)	४.००
६५.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)	१०.००
६६.	भ्रान्तिनिवारण	
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन)	२.००
६८.	वेदविरुद्धमत–खण्डन	१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी	८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)	६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)	७.००
७३.	शास्त्रार्थ जालंधर	३.००
७४.	शास्त्रार्थ अजमेर	३.००
७५.	शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक)	८.००
७६.	शास्त्रार्थ मसूदा	५.००
७७.	शास्त्रार्थ उदयपुर	४.००
७८.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	१०.००
७९.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द)	४०.००
	शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)	
८०.	वर्णोच्चारण शिक्षा	१५.००
८१.	सन्धिविषय	
८२.	नामिक	
८३.	कारकीय	१०.००
८४.	सामासिक	
८५.	स्त्रैणताद्धित	
८६.	अव्ययार्थ	५.००
८७.	आख्यातिक (अजिल्द)	१५०.००

शेष भाग अगले अंक में.......

स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं लाला लाजपतराय से सम्बन्धित

शेर-ए-पंजाब कविता के रचयिता जनाब अब्दुल गनी ब्यावर, अजमेर (राज.) में जन्मे एक राष्ट्रभक्त एवं उदार विचारों के मुस्लिम कवि शायर थे। उनकी शेरो-शायरी उर्दू भाषा में थी परन्तु समझ में आने योग्य है। डॉ. विजया कोठारी, जनाब मोहम्मद बख्श कुरैशी एवं श्री ओमदत्त जोशी की शोध प्रवृत्ति की वजह से अब्दुल गनी साहब का साहित्य एक लकड़ी की पेटिका में मिला। यहाँ पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के उत्कृष्ट कार्यों को लेकर आपने जो गज़ल लिखी वह तथा लाला लाजपतराय के ऊपर श्रद्धाञ्जली स्वरूप आपकी ओजस्वी रचना प्रस्तुत है। कठिन उर्दू शब्दों के अर्थ भी साथ में दिये हुए हैं।

- सम्पादक

स्वामी दयानन्द सरस्वती

तू हुआ जब से रिशी[१] का मुनतखिब[२] दारूल क्याम[३],
और वैदिक धर्म का चर्चा हुआ आलम में आम।
वेद की रौ से भी निकला एक ही रब्बे अनाम[४],
हो गयी दुनिया-ए-हिन्दु तब से बस तेरी ही राम।।
गढ़ गया काशी से आकर तुझ में वैदों का अलम[५],
देववाणी[६] और भाषा[७] ने लिया फिर से जन्म।

(१. स्वामी दयानन्द सरस्वती, २. चयनित, ३. निवास स्थान, ४. एक निराकार ईश्वर, ५. झंडा पताका, ६. संस्कृत, ७. हिन्दी।)

शेर-ए-पंजाब लाला लाजपत राय की शहादत पर खिराजे-अक़ीदत (श्रद्धाञ्जलि)

हाय भारत पर पड़ी कैसी बिपद।
चल दिये अफसोस लाला लाजपत।।
वह शहीद-ए-कौम, शेर-ए-पंज आब।
वह सपूत-ए-हिन्द लाला लाजपत।।
खैर खवाह-ए-हिन्द[१] रहबर बेमिसाल।
बारहा भारत की रखी खूब पत।।
क़ौम की खातिर उठाये दु:ख हज़ार।
जेल में क़ाबिल-ए-सना[२] थी जिसकी गत।।
रहनुमाए-सादिक़[३]-ओ-ईमानदार।
जिसकी थी हट काम में आज़ाद मत।।
था सियासत दान[४] बिलाशक बेनज़ीर
जिसकी खूबी का सनागो[५] है जगत।।
जान तक कुरबान कर दी मुल्क पर।
उसके एहसान हिन्द पर है अनगिनत।।
मच रहा है हिन्द में कोहराम आज।
है जुबान पर लाजपत ही लाजपत।।
थी मुसल्लम राय[६] उसकी बे अदील।
आज़माईश[७] में कभी छोड़ा न सत।।
माहिरे-ए-रमज़-ए-तमद्दुन[८] है खामोश।
क्यों सितार-ए-हिन्द की बिगड़े न गत।।
नाज़ था भारत को तेरी ज़ात पर।
तेरा सानी अब कहां-ऐ-लाजपत।।
है गरेबान चाक मातम में तमाम।
सन्त, साधु और संन्यासी भगत।।
तेरे नोहा खवानो[९] से मामूर है।
दर, गली, कोठा और छत।।
तेरे उठने से फलाह-ए-क़ौम[१०] की।
बात बिगड़ी क्या बिठायें अब जुगत।।
है 'ग़नी' का फरत-ए-ग़म[११] से दिल फिगार।
चश्म-ए-नम[१३] से आँसू रहे हैं छलक।।

रचियता : मास्टर अब्दुल ग़नी 'ग़नी' म्यूनिसिपल कौन्सलर व हैड मौलवी मिशन-हाई-स्कूल ब्यावर, अजमेर

१. खैर खवाह-ए-हिन्द	:	भारत के हित चिन्तक (हितैषी)।
२. क़ाबिल-ए-सना	:	प्रशंसा योग्य (प्रशंसनीय)।
३. रहनुमाए-ए-सादिक़	:	सच्चा मार्ग दशक।
४. सियासत दान	:	राजनीतिज्ञ।
५. सना गो	:	प्रशंसक।
६. मुसल्लम राय	:	पूर्ण परिपक्व मत (राय)।
७. आज़माईश	:	परीक्षा।
८. माहिरे-ए-रमज़-ए-तमद्दुन	:	संस्कृति के रहस्य का ज्ञाता।
९. नोहा खवानो	:	शोक गीत गाने वालों में।
१०. फलाह-ए-क़ौम	:	राष्ट्र-कल्याण।
११. फरत-ए-ग़म	:	शोक की अधिकता।
१२. दिल फिगार	:	हृदय विर्दीण।
१३. चश्म-ए-नम	:	भीगी आँखे से।

।।ओ३म्।।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३१ वाँ ऋषि बलिदान समारोह
❄ कार्यक्रम ❄

शुक्रवार, दिनांक ३१ अक्टूबर, २०१४

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ। ब्रह्मा –डॉ. वागीश

०९.०० से ०९.३० तक – वेद प्रवचन

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से १२.३० तक – **ध्वजारोहण व उद्घाटन सत्र**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन, विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **दक्षिण भारत में बलिदान परम्परा, भजन–प्रवचन–सम्मान**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ, सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **महर्षि दयानन्द–एक राष्ट्र पुरुष, भजन–प्रवचन–सम्मान**

शनिवार, दिनांक १ नवम्बर, २०१४

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ। ब्रह्मा – डॉ. वागीश

०९.०० से ०९.३० तक – वेद प्रवचन

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से १२.३० तक – **आतंकवाद व भ्रष्टाचार का कारण, भजन–प्रवचन–सम्मान**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **वर्तमान में आर्यसमाज की कार्य प्रणाली, भजन–प्रवचन–सम्मान**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ–सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **म.द. आर्ष गुरुकुल–स्नातक सत्र, भजन–प्रवचन–सम्मान**

रविवार, दिनांक २ नवम्बर, २०१४

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.३० तक – यज्ञ, वेदपाठ, **पूर्णाहुति**, ब्रह्मा–डॉ. वागीश

०९.३० से १०.०० तक – वेद प्रवचन

१०.०० से १०.३० तक – प्रातराश

१०.३० से १२.३० तक – **भजन–प्रवचन–सम्मान**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **आर्य युवक सम्मेलन, भजन एवं प्रवचन**

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ–सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **धन्यवाद व समापन सत्र**

वेद–गोष्ठी

विषय	: **भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद**
स्थान	: **ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**
३१ अक्टूबर	: उद्घाटन सत्र – ११.०० से १२.३० तक
	: द्वितीय सत्र – १४.३० से १७.०० तक
१ नवम्बर	: तृतीय सत्र – १०.०० से १२.३० तक
	: चतुर्थ सत्र – १४.३० से १७.०० तक
२ नवम्बर	: समापन सत्र

दीपावली

अन्धकार से प्रकाश की ओर सतत बढ़ने का पर्व

- रामनिवास गुणग्राहक

वेदों और उपनिषदों में अन्धकार से प्रकाश की ओर सतत् आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गई है। अन्धकार से निकल कर प्रकाश की ओर जो निरन्तर आगे बढ़ता जाता है, वह देवत्व को प्राप्त हो जाता है और जो अन्धकार में भटकता रहता है वह दैत्यत्व को प्राप्त होता है। अन्धकार को संस्कृत के प्रसिद्ध कवि शूद्रक निम्न शब्दों में प्रकट करते हैं-

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्निष्फलतां गता।।
(मृच्छकटिकम्)

अर्थात् ऐसा लगता है मानो अन्धकार अंगों पर पुत गया हो, आकाश से मानो काजल बरस रहा हो, दृष्टि तो ऐसे निष्फल हो गई है, जैसे दुर्जन की सेवा व्यर्थ चली जाती है। अज्ञान, अन्धकार व कालिमा के साथ भारतीय मनीषा का प्रारम्भ से ही संघर्ष होता चला आ रहा है। **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** की प्रार्थना इसका प्रमाण है। दीपावली के दीप जलाकर जो प्रकाश फैलाते हैं, वह ऐसा लगता है, मानो प्रकाश के छोटे-छोटे महारथी पंक्तिबद्ध खड़े होकर अन्धकार को ललकारते हुए मानव की प्रकाश प्रिय प्रवृत्ति का व्यावहारिक परिचय दे रहे हों। हम अज्ञान-अन्धकार से निरन्तर लड़ते रहने के प्रतीक पर्व दीपावली को एक लम्बे समय से पूरी श्रद्धा के साथ मनाते चले आ रहे हैं।

जब सताता है अन्धेरा, तब मनाते हैं दिवाली।
पथ रहे ज्योतित मनुज का, ऋषियों ने यह रीति डाली।।

दीपावली का जो स्वरूप आज हमारे सामने है, वह अपने मूल स्वरूप से एकदम अलग है। सच में यह दीपावली 'दीप पर्व' न होकर 'यज्ञ-पर्व' है। उसकी चर्चा करने से पहले हमें यह भी सोचना चाहिए कि क्या हम दीपावली को प्रकाश पर्व रूप में भी उचित रीति से मनाते हैं? क्या हम अपने व्यावहारिक जीवन में प्रकाश अर्थात् ज्ञान का स्वागत करते हैं? बाहरी अन्धकार को दूर करने के लिए दीप जलाना तो एक उपदेश है, एक सन्देश है, एक प्रेरणा है-

बाहरी तम नेत्र को बाधित करे तो बहुत खलता।
हृदय को तम से कभी जन्मी है किंचित भी विकलता।।
दीप वहाँ भी जला लें जहाँ तिमिर हो घनेरा।
छा रही चिर रात काली, जब सताता है अन्धेरा।।

दीपावली से हम प्रेरणा लें अन्दर के अज्ञानान्धकार से लड़ने की। **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** से पहले **'असतो मा सद्गमय'** की प्रार्थना है- असत्य से सत्य की ओर ले चलने की प्रार्थना है। हृदय में ज्ञान ज्योति के बिना दीपावली का पर्व सच्चे अर्थों मे नहीं मनाया जा सकता। दीपावली का मूल स्वरूप 'दीप-पर्व' न होकर 'यज्ञ-पर्व' है। यज्ञ हमारी वैदिक संस्कृति का प्राण है। हम कोई भी मंगलमय कार्य करते हैं, हर्ष उल्लास से परिपूर्ण कोई पर्व मनाते व कोई संस्कार आदि करते -कराते हैं, तो देव पूजन के रूप में यज्ञ अवश्य करते हैं। यज्ञ का एक अर्थ देव पूजन है। महर्षि याज्ञवल्क्य लिखते हैं-**'अग्निर्वै देवानां मुखम्'**- अग्नि देवताओं का मुख है। देवों को खिलाना चाहते हो तो उनके मुख अग्नि में आहुति दो। **'यज्ञो हि देवतानामन्नम्'** (शत ५.१.१.२) अर्थात् यज्ञ ही देवताओं का अन्न है। हमने यज्ञ को भुलाकर देवताओं का जीवन खतरे में डाल दिया। जब देवताओं को उनका अन्न न मिलेगा तो उनका जीवन कैसे चलेगा। हम देव पूजन के नाम पर यज्ञ को छोड़कर सब कुछ करते रहे, उधर यज्ञ के अभाव में देवता अतृप्त ही रहें। **'यज्ञ एव देवानामात्मा'**(शत ८.६.१.१०) यज्ञ ही देवों का आत्मा है। हमने यज्ञ करना छोड़कर देवताओं के आत्मा को उनसे अलग कर दिया- देवत्त्व को आत्महीन करके हमने अपना ही नुकसान किया है। देवत्त्व के मर जाने पर असुरता का राज्य हो जाता है। आज चारों ओर असुरता का ताण्डव हो रहा है। उसका मूल कारण यज्ञ न करना ही है।

वैसे तो सभी पर्व यज्ञ पूर्वक ही मनाये जाते हैं, लेकिन दीपावली को यज्ञ-पर्व कहने का एक महत्त्वपूर्ण कारण है। हमारे तत्त्ववेत्ता ऋषियों ने इस पर्व को नाम दिया है- **''शारदीयनवान्नशस्येष्टि''** अर्थात् शरद् ऋतु में आने वाले नए अन्न से यज्ञ करना। कितनी ऊँची सोच थी हमारे ऋषियों की। फसल पककर तैयार है, अभी घर में नहीं

आई-खेतों में है, उसे घर में लाने से पहले यज्ञ करके देवताओं को खिलाओ। हमारे अन्न को हम सर्वप्रथम यज्ञ करके देवताओं का अन्न बनाते हैं। देवताओं को खिलाते हैं। कितना ऊँचा आदर्श है। **'त्वदीयं वस्तु सर्वात्मना तुभ्यमेव समर्पयामि'**- हे देवाधि देव! तेरी दी हुई वस्तु हम पूरी श्रद्धा के साथ तुझे समर्पित करते हैं। वेद कहता है **'त्वे इद् हूयते हविः'** (ऋ. १.२६.६) हे परमात्मा! तेरे लिए ही हम यह हवि (आहुति) समर्पित करते हैं, यह कैसी कल्याणकारी व्यवस्था है, कैसा महान् चिन्तन है, कैसी पावन जीवन शैली है, क्या विडम्बना है कि हमने सब कुछ भुला दिया। गीता में लिखा है-

तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः।

देवों की कृपा से प्राप्त वस्तुओं को उन्हें दिये बिना जो भोगता है, वह चोर है। सोचिए। हमारा जीवन क्या बन गया है? हम यज्ञ न करके कितने अपराधी हो गए हैं? गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं-

नायं लोकोऽस्ति अयज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम।

(गीता ४.३१)

यज्ञ न करने वालों के लिए तो यह लोक भी सुखद नहीं है, अगले लोक की तो बात ही क्या? श्री कृष्ण का यह कथन हमारे वर्तमान पर कितना सटीक बैठता है। हम यज्ञ छोड़ कर, अयाज्ञिक बन जाने के कारण जीवन के हर क्षेत्र में दुःख, दुविधा, कष्ट और क्लेश भोग रहे हैं। दीपावली का प्राचीन स्वरूप शारदीय नवान्न शस्येष्टि हम सब के लिए एक सन्देश है, एक प्रेरणा है कि हम यज्ञशील बनें, हम अपने खाद्यान्न को घर में लाने से पहले देवों के लिए अर्पित करें। यज्ञ के माध्यम से नवागत अन्न को देवताओं को अर्पित कर देने से शेष अन्न 'यज्ञ शेष' बन जाता है, प्रसाद बन जाता है, ऐसा यज्ञ-शेष खाने वाले परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं।

यज्ञशिष्टाऽमृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्

(गीता ४.३१)

दीपावली को लक्ष्मी पूजन का प्रचलन भी है। लक्ष्मी का सीधा अर्थ करें तो धन सम्पत्ति होता है। पौराणिक कल्पनाओं के अनुसार लक्ष्मी विष्णु की पत्नी हैं तथा उल्लू लक्ष्मी का वाहन है। लगता है किसी ने बड़े विचारपूर्वक यह कल्पना की होगी, लेकिन परम्परा के बँधे हुए मनोमस्तिष्क सत्य को टटोलने के लिए भी तैयार नहीं हो पाते। विष्णु के सत्य, अर्थ को जानकर इस कल्पना का लाभ उठाया जा सकता है। महर्षि याज्ञवल्क्य शतपथ ब्राह्मण में लिखते हैं **'यज्ञो वै विष्णुः'** (३.६.३.३) अर्थात् यज्ञ ही विष्णु है। लक्ष्मी अपने पति विष्णु की सेवा करती है। जो लक्ष्मी (धन) यज्ञ में नहीं लगती, परोपकार व लोक कल्याण के काम नहीं आती वेद में उसे अमर बेल की तरह माना है। अमर बेल क्या है, एक ऐसी पत्र पुष्पहीन लता जो जिस वृक्ष व झाड़ी पर चढ़ जाती है उसे सुखा देती है और स्वयं खूब लहराती है। परहित व लोक कल्याण में न लगने वाली लक्ष्मी उस व्यक्ति के जीवन-रस को सोख लेती है, ऐसा कन्जूस धनवान लक्ष्मी को तो बढ़ा लेता है, लेकिन उसका स्वयं का जीवन नीरस हो जाता है, सूखे वृक्ष की तरह ठूँठ बनकर रह जाता है। भाग्य की विडम्बना है कि आज हमारे पास लक्ष्मी जितनी तेजी से बढ़ रही है, हमारे समाज में उससे भी तेजी से ठूँठों की संख्या बढ़ रही है। जिसे अपने समाज व राष्ट्र के दीन हीन, अभावग्रस्त भूखे पेट, नंगे बदन दर-दर भटक रहे स्त्री-पुरुष व बच्चों की दुर्दशा पर दया नहीं आती, ऐसे संवेदना शून्य पूँजीपतियों को ठूँठ न कहें तो क्या कहें? धन के पीछे अन्धे होकर दौड़ लगाने वालों को 'माया मुग्ध' कहकर हमारे शरीर विज्ञानी आयुर्वेद के ज्ञाता ऋषियों का मानना है कि धन को परहित में न लगाकर निरन्तर बढ़ाते रहने के इच्छुक धन के लोभी अपना भी हित-लाभ नहीं ले पाते। लक्ष्मी के स्वाभाविक प्रवाह को कन्जूसी का बाँध लगाकर रोकने वालों का जीवन रोगों का घर बन जाता है।

मायामुग्धस्य जीवस्य ज्ञेयोऽनर्थश्चतुर्विधः।
हृद्दौर्बल्यं असत्तृष्णा सन्तापः चित्तविभ्रमः।।

माया मुग्ध अर्थात् धन के लोभी मनुष्यों को चार प्रकार के रोग हो जाते हैं-हृदय की दुर्बलता, झूठी तृष्णा, सन्ताप और चित्त विभ्रम। हृदय की दुर्बलता से हृदयघात आदि रोग, झूँठी तृष्णा अर्थात् लम्बी चौड़ी कामनाएँ, सन्ताप अर्थात् इधर-उधर की चिन्ताएँ, तनाव तथा अनियमित भाग-दौड़ से उत्पन्न मानसिक क्लेश और चित्त विभ्रम- अनेक प्रकार की आशंकाएँ क्या होगा, कैसे होगा? कहीं ऐसा वैसा न हो जाए। ये आधि-व्याधि धन लोभी को घेरे रहती हैं और इन्हीं में जकड़ा हुआ धन-कामी मनुष्य अनेक प्रकार के प्राण-घातक रोगों का शिकार होकर सुखों के स्थान पर दुःखों का घर बनकर रह जाता है।

लक्ष्मी पूजन की बात करें तो पूजा नाम सत्कार व सदुपयोग का है। जीवित माता पिता, गुरु, अतिथि आदि

बड़ों के सत्कार व सम्मान करने को उनकी पूजा कहते हैं। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों का मानना यही है। धूपदीप, नैवेद्य, पत्र-पुष्प व जल-दुग्ध आदि के साथ मूर्ति के सामने घण्टे-घड़ियाल बजाना पूजा नहीं मानी जाती। यह निरर्थक क्रिया है। लक्ष्मी की सच्ची पूजा तो लक्ष्मी को यज्ञ के माध्यम से लोकहित में लगाना है। वेदों में पत्नी को पति की अनुगामिनी कहा है- **'पत्युरनुव्रता भूत्वा'** से स्पष्ट है कि पत्नी पति के पीछे चलती है। विष्णु रूप यज्ञ की पत्नी रूपी लक्ष्मी वहाँ कैसे रह सकती हैं, जहाँ यज्ञ न हो? यज्ञशील परिवार यज्ञीय भावनाओं से परिपूर्ण समाज व राष्ट्र कभी लक्ष्मी से हीन नहीं रह सकता। यज्ञ पति के साथ लक्ष्मी रूपी समृद्धि अवश्य ही रहती है। जब भारत ऋषियों का देश था, मुनियों की तपःस्थली थी, यहाँ अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञ निरन्तर होते थे, तो इसका नाम सोने की चिड़िया था। जब हम लक्ष्मी के पति थे, दुर्भाग्य से आज हम लक्ष्मी के वाहन बनकर रह गए हैं। सच्चाई के प्रकाश से आँखें चुराना, सत्य को न देख पाना, हमारा स्वभाव बन गया है।

दीपावली फिर आ रही है, हर वर्ष आती रहेगी, हम उसे मनाना कब सीखेंगे? क्या हमारे ऋषि-महर्षियों की बातों पर हमें भरोसा नहीं रहा? क्या ईश्वर के वेद ज्ञान के प्रति हमारे हृदयों में श्रद्धा नही रही? क्या दीप जलाकर मिठाई खाकर, पटाखे फोड़कर, फुलझड़ियाँ छोड़कर दीपावली मनाना हमारे जीवन में कभी निखार ला सकता है? आओ दीपावली को ऋषियों की बनाई विधि के अनुसार- **'यज्ञ-पर्व के रूप में मनाएँ- शारदीय नवान्नशस्येष्टि'** के रूप में मनाएँ। क्या हम एक अच्छी शुरुआत भी नहीं कर सकते? यदि हाँ, तो संकल्प लें कि हम लक्ष्मी पूजन और दीपावली के समस्त श्रेष्ठ भावों को हृदय में बसाकर इस दीपपर्व को यज्ञपर्व के रूप में ही मनाएँगे। पटाखे, फुलझड़िया जलाकर पर्यावरण को प्रदूषित करना कहाँ की समझदारी है?

- स्मृति भवन, जोधपुर, राजस्थान

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

दीप-पर्व

- दाताराम आर्य 'आलोक'

आ गया है दीप-पर्व
दीपावली
बड़ा महत्त्व है इसका
हम आर्यों के लिए
आज ही के दिन
महर्षि ने त्यागी नश्वर देह
विदा ली संसार से,
देकर वेद-ज्योति
मिटा कर भ्रान्तियाँ संसार की।
और...... प्रज्वलित कर गये
गुरुदत्त जैसे कई दीप
देकर नई रोशनी,
हजारों वर्षों का अन्धेरा
कर दिया दूर
निज जीवन-ज्योति से,
दे दिया पथ नवीन
दिशा-विहीन,
भटके हुए जगत को।
हर आर्य हो अपने आप में
एक दीप, जगमगाता
निकलती हों जिससे किरणें
प्रखर वेद ज्ञान की
तीर की भान्ति नाश
तम का करें जो,
नहीं दिखाई देगी कहीं
अज्ञान की रात काली
सच्चे अर्थों में वही
होगी दीपावली

- ग्रा.पो. बुटेरी, तह. बानसूर,
जि. अलवर, राज.
चलभाष-०९८११७४१९७६

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३१ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ३१ अक्टूबर तथा १-२ नवम्बर, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है - महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३१वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ - २७ अक्टूबर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २ नवम्बर को होगी। यज्ञ के **ब्रह्मा डॉ. वागीश, मुम्बई** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तरराष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है-**भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ३१ अक्टूबर, १-२ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता - प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गतवर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ३१ अक्टूबर को परीक्षा एवं १ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१४ तक 'आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि-उद्यान, अजमेर' इस पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान-समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती है, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३१ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्-आचार्य बलदेव जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर, आचार्य विजयपाल जी-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी जी-शिवगंज, डॉ. राजेन्द्र जी विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाश जी, सत्येन्द्रसिंह जी-मेरठ, डॉ. कृष्णपालसिंह जी-जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश जी आर्य-महू, श्री सत्यपाल जी पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह जी आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	**धर्मवीर**	**ओम मुनि**
प्रधान	**कार्यकारी प्रधान**	**मन्त्री**

जिज्ञासा समाधान – ७३

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा – मेरे मन में कई वर्षों से अनेक प्रश्न घर किये हुए हैं। मेरे सोचने-विचारने पर भी मैं उनका उत्तर नहीं खोज पाया। कई विद्वानों से भी पूछा किन्तु सन्तुष्टि नहीं मिली। अब परोपकारी के माध्यम से उन प्रश्नों का उत्तर जानना चाहता हूँ, क्योंकि आर्यजगत् की वा अन्य पत्रिकाओं में कहीं प्रश्नों के उत्तर नहीं देखे। परोपकारी ही एक ऐसी पत्रिका है जिसमें जिज्ञासाओं का समाधान मिलता है। मेरे प्रश्न-

(क) क्या ईश्वर पापों को क्षमा करता है? नहीं करता तो क्यों नहीं करता और यदि कर दे तो क्या हानि हो जायेगी?

(ख) क्या ऐसे भी गुण हैं जो ईश्वर में नहीं हैं?

(ग) ईश्वर हमारे कर्मों का फल तत्काल क्यों नहीं देता? यदि बाद में देरी से देता है तो मनुष्यों में कर्मफल के प्रति शंका, अविश्वास उत्पन्न होता है।

- राधामोहन, बांस बरेली, उ.प्र.

समाधान-(क) ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता क्योंकि वह न्यायकारी है। यदि परमेश्वर किसी को दण्ड और किसी के पाप को क्षमा करे तो वह न्यायकारी न रहेगा। परमेश्वर का न्याय यही है कि जिसने जैसा कर्म किया है उसको वैसा ही यथावत् फल देना। अपराध, पाप करने वाला चाहे ईश्वर को मानने, उसकी उपासना करने वाला हो या उसको न मानने भक्ति न करने वाला हो। सभी के अपराध का दण्ड परमेश्वर यथावत् देता है।

इस विषय में महर्षि दयानन्द ने जो लिखा है उसको हम ज्यों का त्यों यहाँ लिख रहे हैं।

"प्रश्न- ईश्वर अपने भक्तों के पाप क्षमा करता है, वा नहीं? उत्तर- नहीं। क्योंकि जो पाप क्षमा करे तो उसका न्याय नष्ट हो जाये और सब मनुष्य महापापी हो जायें। क्योंकि क्षमा की बात सुन ही के उनको पाप करने में निर्भयता और उत्साह हो जाये। जैसे राजा अपराधियों के अपराध को क्षमा कर दे तो वे उत्साहपूर्वक अधिक-अधिक बड़े-बड़े पाप करें, क्योंकि राजा अपना अपराध क्षमा कर देगा और उनको भी भरोसा हो जाये कि राजा से हम हाथ जोड़ने आदि चेष्टा कर अपने अपराध छुड़ा लेंगे और जो अपराध नहीं करते, वे भी अपराध करने से न डरकर पाप करने में प्रवृत्त हो जायेंगे। इसलिए सब कर्मों का फल यथावत् देना ही ईश्वर का काम है, क्षमा करना नहीं।" (सत्यार्थप्रकाश सम्मुलास ७)

इस पूरे प्रसंग में महर्षि ने अत्युत्तम प्रकार से स्पष्ट कर दिया है कि ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता, क्यों नहीं करता इसका कारण भी बता दिया और क्षमा करने से क्या हानियाँ हैं वह कथन भी कर दिया है।

पाप क्षमा करने वाली बात इन पुराणपन्थियों ने चला रखी है। इनका कहना है जो कोई कितना भी पाप करे, पाप करने के पश्चात् नाम स्मरण, तीर्थ स्थान पर जाने, देवता के दर्शन करने, किसी नदी में स्नान करने आदि से पाप क्षमा हो जाते हैं। देखिये इनकी पोपलीला-

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।

(ब्र.पु.अ. १७५. श्लो. ८२/पद्मपुराण उ.ख.अ. २३.२)

गंगा में स्नान करने की तो बात दूर रही, यदि सैकड़ों-सहस्रों कोश दूर से भी गंगा-गंगा कहे तो उसके सब पाप नष्ट होकर वह 'विष्णुलोक' अर्थात् वैकुण्ठ को जाता है। यह पोपों का कथन है। प्रथम तो वैकुण्ठ ही इनका काल्पनिक है और गंगा का नाम लेने मात्र से यदि पाप छूटते हैं तो वर्तमान के सभी अपराधी जो कि कारागृह में हैं उनसे गंगा-गंगा कहलवाकर छोड़ देना चाहिए क्योंकि इनके अनुसार गंगा कहने मात्र से पाप छूट जाते हैं तो अपराधी को कारागृह में रोककर दण्ड क्यों दिया जाये। हे पुराण पन्थियो! घर में तुम माँ का अपमान करो और गंगा कह दो, पिता और गुरु का अपमान करो और गंगा कह दो, देशद्रोह करो और गंगा कह दो, गो हत्या करो और गंगा कह दो, तुम्हें तो पाप लगेगा नहीं।

तुम तो अविद्या के पुजारी हो, स्वयं पापी होकर अन्यों को पापी बनाओगे। यदि बचना है तो वेद मार्ग अपनाओ और वेदानुसार जान लो कि किया हुआ पाप क्षमा नहीं होता, चाहे गंगा कहो या गंगा में डूब मरो।

और इन पुराणपन्थियों की लीला देखिये-

प्रातः काले शिवं दृष्ट्वा निशिपापं विनश्यति।
आजन्मकृतं मध्याह्ने सायाह्ने सप्तजन्मनाम्।।

इसका अर्थ- जो मनुष्य प्रातःकाल में शिव अर्थात् लिङ्ग वा उसकी मूर्त्ति का दर्शन करे तो रात्री में किया हुआ, मध्याह्न में दर्शन से जन्म भर का, सायङ्काल में दर्शन

करने से सात जन्मों का पाप छूट जाता है, यह दर्शन का महात्म्य है।

अब देखिये इनकी मूढ़ता कि जब एक बार दर्शन करने मात्र से जन्म भर का पाप नष्ट हो गया तो रोज-रोज (नित्यप्रति) दर्शन की अब क्या आवश्यकता रह गई। इनकी मान्यता अनुसार तो रात-दिन वा जन्म भर पाप करते रहो और शिव दर्शन कर लो सब पाप नष्ट हो जायेंगे। इनको यह नहीं पता कि ऐसा विश्वास कर अधिक-अधिक पाप कर अपने इस लोक और परलोक दोनों का नाश करेंगे। इसलिए चेतो और जान लो कि किया हुआ पाप क्षमा नहीं होता उसका तो फल भोगना ही होता है। दण्ड भय से पाप रुकते हैं और क्षमा की बात मानने से पाप बढ़ते हैं।

हे पुराण पन्थियो! तुम्हारे ही पुराण में लिखा है-

नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।।

- ब्रह्मवै.पु.प्र. ३७.१६

सैकड़ों-करोड़ों कल्पों से किये कर्म बिना भोगे क्षीण नहीं होते। किये गये शुभ-अशुभ कर्मों को अवश्य भोगना ही पड़ता है।

जैसे पुराणपन्थी पाप क्षमा होने वाली बात कहते हैं ऐसे ही आजकल के तथाकथित गुरु भी कहते हैं। उनका कथन गुरुशरण तक है। वे कहते हैं हमारी शरण में आओ हमसे नाम दान लो पाप नष्ट हो जायेंगे। उनका यह कथन वेद विरुद्ध होने से मान्य नहीं है। यथार्थ में सच्चा गुरु ऐसी बात कभी नहीं कहेगा कि तुम्हारे पाप बिना भोगे नष्ट हो जायेंगे।

इसलिए एक बार पुन: कहते हैं ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता उनका यथावत् दण्ड रूप फल देता है।

(ख) ऐसे बहुत से गुण हैं जो ईश्वर में नहीं हैं। कुछों का वर्णन यहाँ करते हैं-

ईश्वर में रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द गुण नहीं हैं। हल्का-भारी रूप गुण ईश्वर में नहीं है। राग, द्वेष इच्छा आदि गुण परमेश्वर में नहीं हैं। संयोग-वियोग ईश्वर में नहीं हैं। अविद्या, जन्म, मरण आदि गुण ईश्वर में नहीं हैं। एकदेशीय, छोटा, बड़ा, ऊँचा, नीचा गुण ईश्वर में नहीं हैं। अन्याय, क्रुरता, हिंसा, पाप, छल, कपट परमेश्वर में नहीं हैं। इस प्रकार जितने भी परमेश्वर के कर्म व स्वभाव से विपरीत गुण हैं वे गुण परमेश्वर में नहीं हैं। इसी आधार पर उसको निर्गुण कहा गया है। न कि मात्र निराकार होने से निर्गुण कहा है।

(ग) कुछ कर्मों का फल हमें तत्काल मिलता है, कुछ का इस जन्म में और कुछ का अन्य जन्मों में। यह ईश्वरीय व्यवस्था न्याय संगत व युक्तियुक्त है। हमने भोजन किया पानी पिया इसका फल हमें उसी समय मिलता है, हमारी भूख-प्यास की निवृत्ति हो जाती है। हम ऊपर से गिरे, हमें चोटें आयी फल उसी समय मिल गया। हम व्यायाम करते हैं। हमें उसका फल महिने दो महिने में दिखने लगता है। ऐसे ही कुछ अन्य कर्म भी हैं जिनका फल हमें उसी समय वा कुछ काल बाद मिलता है, मिलने लगता है। अब ये कहे कि कर्मों का फल परमेश्वर तत्काल क्यों नहीं देता उचित नहीं। हाँ, जिन कर्मों का फल परमेश्वर को तत्काल देना है उनका फल तत्काल देता है सभी कर्मों का नहीं। सभी कर्मों का फल तत्काल मिल ही नहीं सकता। जैसे कोई औषधी खाने के छ: महिने बाद प्रभाव करती है और कोई खाते ही प्रभाव करती है। ऐसे ही कुछ कर्मों का फल तत्काल और कुछ कर्मों का फल उनका समय आने पर। सभी कर्मों का तत्काल फल देने पर परमेश्वर की न्यायकारिता भी नहीं रहेगी, क्योंकि जिन कर्मों का फल हमें मनुष्य शरीर मिला हुआ है अभी उसको छुड़ा अन्य शरीर देना न्याय नहीं। पहले इस शरीर का भोग पूरा हो जाये उसके बाद अन्य भोग देना उचित है। इसी में परमेश्वर की दया भी है कि कर्म करने वाले को अभी अवसर है वह अपने जीवन को उत्कृष्ट बना लेवे, बना सके। यदि तत्काल फल दे दिया तो उसको श्रेष्ठ बनने का अवसर नहीं रहा।

जिन कर्मों का फल इस जन्म में भोग ही नहीं सकते उन कर्मों का फल तत्काल परमेश्वर कैसे देवे। परमेश्वर सर्वज्ञ है जब जिस कर्म के फल देने का समय आता है उसी समय फल देता है। वह कर्म चाहे तत्काल फल देने वाला हो वा इस जन्म अथवा अन्य जन्म में। फल तो परमेश्वर नियत समय पर ही देता है।

रही बात कर्मफल के प्रति शंका, अविश्वास वाली तो जिसको परमेश्वर की व्यवस्था न्याय समझ में नहीं आया है उसको तो ये हो ही सकते हैं। किन्तु जिसको कर्मफल सिद्धान्त ठीक-ठीक समझ आ गया है उसको इसके प्रति शंका, अविश्वास कदापि नहीं हो सकता। इसलिए कर्मफल सिद्धान्त को समझे और शंका अविश्वास से दूर रहें।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० सितम्बर २०१४ तक)

१. श्री मनुस्वामी, अजमेर २. श्री विनय कुमार झा, जयपुर, राज. ३. श्री विनोद प्रकाश गोयल, जयपुर, राज. ४. श्री लक्ष्मीकान्त, कोलकाता ५. श्री सुरेश चन्द्र जयसवाल, कोलकाता ६. श्रीमती कमला आर्या, जोधपुर, राज. ७. श्री पुखराज सोनी, अजमेर ८. श्री ब्रह्मदत्त, देनहाक, हॉलैण्ड ९. श्री राहुल, जोधपुर, राज. १०. श्री करणसिंह राठौड, भीलवाड़ा, राज. ११. श्री गोविन्द कुमार शर्मा, किशनगढ़, राज. १२. श्रीमती प्रभा, दिल्ली १३. श्री ब्रजमोहन गुप्ता, पंचकूला, हरि. १४. श्री वासुदेव आर्य, अजमेर १५. श्रीमती उमा सोनी, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३० सितम्बर २०१४ तक)

१. श्री शिवसिंह आर्य, पलवल, हरि. २. श्री टन्डन भार्गव, जैसलमेर, राज. ३. श्री पुष्पेन्द्र चौहान, अजमेर ४. श्री राजेन्द्र कुमार सिंहल, अजमेर ५. श्री मनुस्वामी, अजमेर ६. श्री विनय कुमार झा, जयपुर, राज. ७. श्रीमती कमला आर्या, जोधपुर, राज. ८. श्री मयंक, अजमेर ९. श्रीमती निर्मला, अजमेर १०. श्रीमती प्रेमवती, नई दिल्ली ११. श्रीमती कमला देवी, अजमेर १२. श्री ओमप्रकाश सुशीला पारीक, अहमदाबाद, गुज. १३. श्रीमती उमा सोनी, अजमेर १४. श्री देशबन्धु मदान, फरीदाबाद, हरि. १५. श्री मूलशंकर शान्ति पारीक, जयपुर, राज.

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

इतिहास से

- इन्द्रजित् देव

समय के इस बन्द कमरे में
जन्म ले चुकी हैं-
कुरीतियाँ, कुनीतियाँ, अन्धविश्वास।
इसमें उगी हैं-
अन्ध परम्पराएँ व नपुंसक कृतियाँ।
इसमें पनपे हैं-
स्वार्थ, षड्यन्त्र और विवाद
जड़ता के तर्कहीन संवाद।
पर तुम्हें चाहिए
ओ मेरे इतिहास!
आकाश का फैलाव
आदर्शों का अन्तहीन विस्तार
जो चेतना की महायात्रा
व व्यक्ति से व्यक्ति तक,
द्वार से द्वार तक,
नगर से नगर तक,
एक युग से दूसरे युग तक की
शाश्वत गति का चेतन सन्दर्भ बने।
ओ मेरे इतिहास!
श्रुतियों का आलोक चाहिए तुम्हें,
जो मेरे दुराग्रही पूर्वजों की नपुंसक कृतियों को
बदल दे फिर आर्ष ग्रन्थों में।

- चूना भट्ठियाँ, यमुनानगर-१३५००१ (हरि)

चलभाष- ०९४६६१२३६७७

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

महर्षि पतञ्जलिकृत व्याकरणमहाभाष्य में जीवन, दर्शन एवं विज्ञान

- **आचार्य सनत्कुमार**

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थों में शिक्षा से लेकर वेद और उपवेदों तक जिस शिक्षापद्धति का वर्णन किया है, उसमें पठन-पाठन के रूप में द्वितीय स्थान पर व्याकरणशास्त्र का वर्णन किया है। उसी व्याकरणशास्त्र में पाणिनीकृत अष्टाध्यायी का महर्षि पतञ्जलिकृत व्याख्यात ग्रन्थ महाभाष्य है। इसी महाभाष्य में महर्षि पतञ्जलि ने कहा '**कथं पुनः भगवतः पाणिने आचार्यस्य लक्षणं प्रवृत्तम्।**' इसका उत्तर देते हुए कहा है '**सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे**' शब्द, अर्थ और उसका सम्बन्ध (तत्त्वज्ञान) यह नित्य है, इसको जानने के लिये व्याकरण ही एक साधन है। शब्दार्थ सम्बन्ध के साथ-साथ व्याकरण महाभाष्य में व्याकरण पढ़ने के १८ प्रयोजन दिये हैं। जिनमें कुछ इस प्रकार के हैं-

'**रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्।**'

(पस्पशाह्निक)

जो मनुष्य वेदों की रक्षा करना चाहता है, अर्थात् जो ज्ञान, कर्म, उपासना, ध्यान सभी पदार्थों का विज्ञान प्राप्त कर अपने को महान् बनाकर संसार का उपकार करना चाहता है, उसको व्याकरण पढ़ना चाहिये।

'**ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्चेति। प्रधानं च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्। प्रधाने च कृतो यत्नः फलवान् भवति।**' (पस्पशाह्निक)

ब्राह्मणवृत्ति वाले मनुष्यों का निष्काम धर्म है कि वह ६ अङ्गोसहित (शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, कल्प, ज्योतिष) वेदों का अध्ययन करे और उन ६ अङ्गों में व्याकरणशास्त्र शब्दार्थ सम्बन्ध का ज्ञान कराने के कारण प्रधान है और जो व्यक्ति प्रधान में पुरुषार्थ करता है उसको अत्यधिक फल की प्राप्ति होती है।

शब्दार्थ सम्बन्ध के साथ-साथ व्याकरणमहाभाष्य में जीवन जीने का विज्ञान, पदार्थों का स्वरूप, आकर्षण सिद्धान्त, काल, क्रिया, जाति, भोजन तथा सम्बन्धों के तत्त्वज्ञान के साथ-साथ इतिहास, कृषि, यज्ञ, लोकव्यवहार, आत्मा, ब्राह्मण का स्वरूप, आर्यावर्त देश का स्वरूप, इत्यादि का ज्ञान भी होता है। उसी को आधार बनाकर के जीवन सम्बन्धी विज्ञान एवं पदार्थों के तत्त्वज्ञान का संक्षेप से प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है।

यथा जीवन विज्ञान में सम्बन्धों का सत्यस्वरूप-सम्बन्धों के विषय में **अनेकमन्यपदार्थे** (अष्टा.२/२/२४) सूत्र की व्याख्या करते हुए महर्षि पतञ्जलि लिखते हैं-

सार्थिकानामेकप्रतिश्रये उषितानां प्रातरुत्थाय प्रतिष्ठमानानां न कश्चित्परस्परमभिसम्बन्धो भवति। एवं जातीयकं भ्रातृत्वं नाम।।

(महा. अनेकमन्यपदार्थे पृ.सं. ४५४)

भाई का भाई के साथ तथा अन्य सम्बन्धियों के साथ परस्पर क्या सम्बन्ध है? इसका उत्तर देते हुए भाष्यकार ने सम्बन्धों के तत्त्वज्ञान का वर्णन किया है जैसे रात्रि में एक स्थान पर रहने वाले यात्रियों में, जो कि प्रातःकाल उठकर अपने-अपने गन्तव्य स्थान पर चले जायेंगे, उनमें किसी प्रकार का परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं होता है इसी प्रकार का भ्रातृत्व भी है (वह भी एक माता के उदर में निवास करके भी यात्रियों के समान परस्पर असम्बद्ध है)। इसी जीवन के सत्य को न समझने के कारण मन में परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की अनेक समस्याओं ने जन्म लिया हुआ है। जो मानव की सर्वविध उन्नति में बाधक बनी हुई है। ये समस्याएँ शरीर, मन, प्रकृति, राष्ट्र आदि के भौतिक सत्य (अर्थात् '**यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे**')के स्वरूप को ठीक से जानकर ही दूर हो सकती है।

जीवन के दोषों को हटाकर सफलता प्राप्ति के उपाय- जीवन विज्ञान के किसी लक्ष्य में पूर्ण सफलता के उपायों के विषय में कहा कि '**तत्कारी च भवांस्तद्द्वेषी च।**'

(महा. स्वरितात् संहितायामनु. १/२/३९)

अर्थात् मनुष्य जिस कार्य को भी करे उससे प्रेम करे, द्वेष न करे। प्रेम करने से कार्य के प्रति श्रद्धा रहेगी, जिससे लक्ष्य की शीघ्र प्राप्ति तथा बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक और कार्य का विकास भी होगा।

अन्यच्च-यथाऽभेदस्तथाऽस्तु।

(महा. हयवरट् ५)

संगठन, समाज, धर्म, राष्ट्र या विश्व की उन्नति के हेतु से जब व्यक्ति जीवन के कर्मरूपी क्षेत्र में कार्यरत होता है, तब पदाधिकारियों या स्वयं के अज्ञान के कारण उसे अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिससे सामाजिक, सांगठनिक आदि दृष्टि से महती हानि होती है। तो ऐसे में महाभाष्यकार ने उपाय बताया है

'**यथाऽभेदस्तथाऽस्तु**'।

अर्थात् व्यक्ति यदि ऋषियों, वेदों या समाज या संगठन के संस्थापक ने इस विषय में क्या निर्णय दिया है, उसको स्वीकार करे तो आपस में कोई मतभेद नहीं होगा। क्योंकि सभी पक्षों की उनके प्रति श्रद्धा है। पुन: इसे सर्वविध उन्नति होगी।

अन्यच्च- गौणमुख्ययोर्मुख्ये कार्यसम्प्रत्यय:

(महा. स्त्रियाम् ४/१/१५)

व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार के कार्य गौणरूप से तथा प्रधानरूप से उपस्थित होते हैं। जैसे- एक गुरुकुलीय विद्यार्थी के लिये गौणरूप से जीवन जीने के लिये गौण अध्ययनार्थ अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। किन्तु ऋषियों के अनुसार विशिष्ट एवं मुख्य जीवन के लिये साङ्गोपाङ्ग वेदाध्ययन अति आवश्यक है। ऐसी स्थिति में क्या करे? तो ऋषियों ने जो एक विद्यार्थी के लिये मुख्य जो साङ्गोपाङ्ग वेदाध्ययन बताया है वही करे। यही भाष्यकार का भी आदेश है।

अन्यच्च-दृष्टस्य हि दोषस्य सुसुख: परिहार:

(महा. स्त्रियाम् ४/१/१३)

अर्थात् सर्वविध सफलता प्राप्ति के लिये जीवन में आवश्यक है कि मनुष्य सफलता प्राप्ति में बाधक अपने सभी प्रकार के दोषों को जाने, स्वयं ज्ञान न होने पर श्रेष्ठ विद्वानों से अपने दोषों के बारे में पूछे। क्योंकि जिन दोषों को आप ने जान लिया है उनको अच्छी प्रकार से हटाया जा सकता है और दोषों की निवृत्ति होने पर सफलता की प्राप्ति निश्चित है।

अन्यच्च- य एष मनुष्य: प्रेक्षापूर्वकारी भवति सोऽध्रुवेण निमित्तेन ध्रुवं निमित्तमुपादत्ते।

(महा. क्तक्तवतू. १/१/२६)

अर्थात् जो मनुष्य किसी भी कार्य को करने से पूर्व कार्य के विषय में अच्छी प्रकार चिन्तन-मनन करता है उस व्यक्ति का कोई भी कार्य जीवन में असफल नही होता है। और वह व्यक्ति इस प्रक्रिया से चलता हुआ अनित्य शरीर, इन्द्रियों आदि से नित्य पदार्थ आत्मा तथा परमात्मा को जान लेता है।

शरीरात्मा तथा अन्तरात्मा एवं सुख-दु:ख का कारण- **'कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रिय:'** (अष्टा. ३/१/८७)

इस सूत्र में भाष्यकार ने कहा है कि कर्म से भिन्न कर्ता-आत्मा स्वयं के उपस्थिति में भी कर्म देखा जाता है। जैसे **'हन्ति आत्मानं' 'आत्मना हन्यते'**- (महा. कर्मवत्कर्मणा. ३/१/८७)

अर्थात् **'आत्मा आत्मानं हन्ति' 'आत्मना आत्मा हन्यते'** (महा. कर्मवत्कर्मणा. ३/१/८७) यहाँ आत्मना इस स्वयं कर्ता की उपस्थिति में वही आत्मा कर्म भी है, यही स्वाभाविक कर्म है। विस्तार देते हुए कहा है-

क: पुनरात्मानं हन्ति, को वा आत्मना हन्यते?

द्वावात्मानौ- शरीरात्मा, अन्तरात्मा च। अन्तरात्मा तत्कर्म करोति येन शरीरात्मा सुखदु:खे अनुभवति। शरीरात्मा तत्कर्म करोति येनान्तरात्मा सुखदु:खे अनुभवति।

(महा. कर्मवर्त्मणा. ३/१/८७)

अर्थात् कौन अपने आप को मारता है तथा अपने द्वारा स्वयं कौन मारा जाता है? दो आत्मा हैं- शरीरात्मा और अन्तरात्मा।

अन्तरात्मा कर्म करता है जिससे शरीरात्मा सुख एवं दु:ख का अनुभव करता है। इसी प्रकार शरीरात्मा में हुए कार्य से या किये गये कर्म से अन्तरात्मा सुख तथा दु:ख का अनुभव करता है। यहाँ शरीर, इन्द्रिय आदि उपाधि से युक्त को औपचारिक रूप से शरीरात्मा कहा है। जैसे- किसी विशेष दु:खद घटना को याद कर अधिक रोने से आँखों में पीडा हो तो अन्तरात्मा ने शरीरात्मा को दु:खी किया। इसको इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि व्यक्ति मन, वाणी और शरीर से जो भी कर्म करता है उसका प्रभाव अच्छे-बुरे कर्मों के अनुसार शरीर एवं अन्त:करण दोनों पर पडता है। जैसे यदि व्यक्ति अन्त:करण से क्रोध करता है तो आयुर्वेद के अनुसार उसका पित्त विकृत होकर उसके शरीर में पीलिया के रोग को उत्पन्न कर सकता है। वही रोग पुन: चिन्ता का कारण बनकर अन्तरात्मा को दु:खी करता है।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक खाता संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक खाता संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

संस्था - समाचार

१६ से ३० सितम्बर २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन:- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान, आर्यजगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता है। प्रात: काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय भी किया जाता है। दोनों समय प्रवचन, स्वाध्याय की व्यवस्था है। इन प्रवचनों, स्वाध्याय के क्रम में वेदमन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों पर क्रमश: विचार किया जाता है।

इन दिनों प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **डॉ. धर्मवीर जी**, मृत्यु सूक्त (ऋ. १०/१८) के मन्त्रों की व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं। सूक्त के चतुर्थ मन्त्र-

इमं जीवेभ्य: परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्।
शतं जीवन्तु शरद: पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन।।

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि मृत्यु तो प्रत्येक शरीरधारी को आनी ही है। लेकिन मानव योनि में व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से अपने जीवन को बड़ा कर सकता है और अपने कुकर्म से इसे छोटा भी कर सकता है। मुमुक्षु जन ईश्वर की आज्ञा के अनुसार ब्रह्मचर्य पालन करने में, निरन्तर कर्म करने में पुरुषार्थ करते हैं अत: वे इच्छित लम्बी आयु को प्राप्त करते हैं, मानो परमात्मा ने एक नियत परिधि बना दी हो, जिसमें मृत्यु भी उन्हें अपना शीघ्र ग्रास नहीं बना सकती है। पाँचवे मन्त्र-

यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथ ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु।
यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूंषि कल्पयैषाम्।।

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि संसार में जिस आनुपूर्वी क्रम से दिन उसके बाद रात, फिर उसके बाद दिन फिर रात होते हैं (यथा+अहानि+अनुपूर्वं भवन्ति), जिस क्रम से वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर ऋतुएँ एक के बाद एक क्रमश: आती जाती हैं (यथा ऋतव ऋतुभि:+यन्ति साधु) और जिस प्रकार पिता से पुत्र, फिर इस पुत्र के पिता बनने पर उससे पुत्र होता हैं अर्थात् वंश परम्परा चलती है, उसी प्रकार ईश्वर की आज्ञा में चलने वाले पुरुषार्थी साधकों का जीवन निश्चित ही आगे बढ़ता है। मन्त्र-

इमा नारीरविधवा: सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु।
अनश्रवोऽनमीवा: सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे।।७।।
उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युजनित्वमभि सं बभूथ।।८।।

की व्याख्या में आपने बताया कि विवाह/गृहस्थ आश्रम का मूल उद्देश्य श्रेष्ठ सन्तानों का निर्माण करना व अन्य तीनों आश्रमों का पालन करना होता है। यदि पहले-पहल ही पति-पत्नी में से किसी एक की मृत्यु हो जाए तो दूसरे को अपने लिए नया साथी चुन लेना चाहिए। यहाँ मन्त्र में स्पष्ट संकेत है कि पति के मर जाने पर स्त्री को अपने जीवन के इन दु:खों को पीछे छोड़ते हुए पुन: एक नई शुरुआत करनी चाहिए अर्थात् उसे पुनर्विवाह करना चाहिए। कई बार हम अपने बनाए हुए सामाजिक ढाँचे में पुनर्विवाह/नियोग जैसे वैदिक विधानों को स्वीकार करने में हिचकिचाते हैं। पुन: समाज उस तरफ दोष युक्त हो जाता है। हम पुन: अपनी झूठी प्रतिष्ठा को बचाने के लिए कड़े नियम बनाते हैं, निर्बलों को दबाते हैं, लेकिन हम उन्हें तब तक ही दबा सकते हैं जबतक कि वे निर्बल हैं। जब वे निर्बल सबल बन जाते हैं तो वे हमारे ही विरुद्ध खड़े हो जाते हैं और खड़े हो जाते हैं उस सामाजिक ढाँचे के विरुद्ध भी जिसे हमने अपनी झूठी प्रशंसा बनाने के लिए खड़ा किया था। आधुनिक समाज में तथाकथित महिलावादी, दलितवादी गतिविधियाँ इसी का परिणाम है। परिणामस्वरूप समाज बंटता जाता है और विधर्मी इन शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाकर उन्हें अपने में शामिल कर लेते हैं।

आचार्य सोमदेव जी ने अपने प्रवचन क्रम में बताया कि जिनमें सच्ची आध्यात्म पिपासा होती है तो वे सही मार्ग को पा ही लेते हैं। एक बार एक सिद्ध गुरु के पास एक युवक आया। युवक गुरु के प्रसन्नचित्त स्वभाव से अत्यधिक प्रभावित था, उसने गुरु से इसका कारण पूछा। गुरु ने कहा कल प्रात: काल आना तब बताएँगे। अगले दिन प्रात:काल युवक कारण जानने पहुँच गया। गुरु ने कहा- पहले भ्रमण में चलते हैं आपके प्रश्न का उत्तर बाद में देंगे। युवक गुरु के साथ हो गया। दोनों ठहलते-ठहलते काफी आगे निकल गए। इस दौरान गुरु मौन ही रहे। युवक के मन में थोड़ी-थोड़ी झुंझलाहठ आने लगी कि देखों मैंने इनसे इनकी प्रसन्नचित्त रहने का कारण पूछा था और ये इसका सीधा उत्तर न देकर अपने पीछे-पीछे घुमाने में लगे हैं। चलते-चलते रास्ते में एक सरोवर आया। गुरु ने कहा चलो- इसमें स्नान कर लेते हैं। युवक को थोड़ा और क्रोध तो

आया परन्तु वह उत्तर की आशा में गुरु के पीछे-पीछे सरोवर में भी कूद गया। गुरु तैरते-तैरते थोड़ा अन्दर, गहरे पानी में चले गए, युवक भी वहाँ पहुँच गया। गुरु शरीर से थोड़े बलिष्ठ थे उन्होंने अपने हाथ से युवक का सिर पानी में डूबो दिया। युवक छटपटाने लगा, लेकिन गुरु ने सिर पानी में ही डूबोए रखा। पुन: जब युवक का दम घुटने लगा तो उसने अपनी पूरी शक्ति लगायी और पानी से बाहर आकर, सीधा सरोवर से बाहर आ गया। अब उसके धैर्य की सीमा टूट चुकी थी। कपड़े पहनते हुए, उसके मन से गुरु के प्रति श्रद्धा और उनसे उत्तर की चाह जाती रही। पुन: गुरु भी वहाँ आ गए। वह गुरु को कड़ा बोलने लगा। गुरु ने कहा, चलो तुम्हारे साथ मैंने अच्छा व्यवहार नहीं किया, लेकिन तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर तो दे सकते हो। युवक ने कहा- वह क्या है? गुरु बोले- जब मैंने तुम्हें पानी में डुबोया था उस समय तुम्हारे मन में क्या विचार आ रहे थे। युवक बोला- और क्या विचार आएगा, मैं बाहर आना चाहता था। गुरु ने पुन: प्रश्न किया- क्या उस समय तुम्हें अपने परिवार, सम्पत्ति, स्नेहीजनों का थोड़ा भी विचार नहीं आया। शिष्य ने न में उत्तर दिया। गुरु बोले- यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है। शिष्य को बात समझ में नहीं आई। गुरु ने पुन: समझाते हुए बताया कि जैसे जब तुम पानी में सांस नहीं ले पा रहे थे, तो पूरी इच्छा शक्ति से केवल सांस लेना चाहते थे, और कोई सांसारिक विषय तुम्हारे चिन्तन में थी ही नहीं, उसी प्रकार जब मैं तुम्हारी तरह ही जिज्ञासु था, उस समय मुझे अपनी चित्त की प्रसन्नता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा थी। यही तीव्र इच्छा, मुझे यहाँ तक ले आई। युवक को बात समझ आ गई कि किसी भी मार्ग में सफलता प्राप्त करने के लिए, उसमें सफलता प्राप्त करने की तीव्र चाह होनी चाहिए।

प्रचार यात्रा- (क) बाड़मेर, राज. प्रचार यात्रा:- परोपकारिणी सभा, साधना-स्वाध्याय के अनुकूल वातावरण के कारण, अपने वैदिक विद्वानों के कारण (डॉ. धर्मवीर जी, आचार्य सत्यजित् जी, स्वामी विष्वङ् जी, आचार्य सत्येन्द्र जी, आचार्य सोमदेव जी आदि), अपने योग, ध्यान प्रशिक्षक, आर्यवीर, आर्य वीरांगना शिविरों के कारण जहाँ आर्यों को अपनी ओर आकर्षित करती ही है, वहीं दूसरी ओर इसके प्रचारक, भजनोपदेशक देश के विभिन्न भागों में जाकर आर्य-सिद्धान्तों को फैलाने का कार्य करते रहते हैं।

इसी क्रम में पिछले दिनों २ सितम्बर २०१४ को **आचार्य सोमदेव जी, आचार्य कर्मवीर जी, आचार्य सत्यप्रिय जी** आदि बाड़मेर की ओर अपने प्रचार कार्यक्रम में निकले। सर्वप्रथम अजमेर से **सराधना आर्यसमाज** पहुँचकर समाज का भवन देखा। किसी समय सक्रिय रहा समाज आज पूरी तरह से बन्द पड़ा है। पुन: निश्चय किया कि प्रत्येक रविवार को गुरुकुल ऋषि उद्यान से यहाँ कोई न कोई यज्ञ करवाने अवश्य आएगा ताकि कम से कम साप्ताहिक यज्ञ की परम्परा तो चलती रहे। **आचार्य सत्यप्रिय जी, देवमुनि जी, प्रणवमुनि जी** आदि प्रत्येक रविवार को यहाँ आकर यज्ञ करवाने लगे हैं और इससे आसपास के यज्ञप्रेमी जन भी पुन: समाज से जुड़ने लगे हैं।

सराधना से जोधपुर स्मृति भवन पहुँच कर रात्रि विश्राम किया। अगले दिन प्रात:काल अग्निहोत्र कर स्मृति भवन न्यास तथा शहर की आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से भेंट कर ऋषि मेले के लिए आमन्त्रण प्रदान किया। वहाँ से चलकर **बालोतरा (जिला बाड़मेर, राज.)** में दोनों आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से भेंट की, समाज की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। यहाँ की पुरानी समाज आर्यवीर दल आदि के शिविर लगवाने हेतु काफी उत्साहित हैं। आचार्य सोमदेव जी व आचार्य कर्मवीर जी ने आगामी शिविरों के लिए यथासामर्थ्य अपना समय प्रदान करने का आश्वासन दिया। बालोतरा से चलकर **बन्नेडिया का तला, तारातरा (जिला बाड़मेर, राज.)** में पुरी सम्प्रदाय के महन्त जगरामपुरी जी के यहाँ पहुँचे। स्वामी जगरामपुरी जी आर्यसमाज के प्रति काफी झुकाव रखते हैं, आप अपने शिष्यों को आर्ष गुरुकुलों में पढ़ने के लिए भेजते रहे हैं।

तारातरा से लौटते हुए **आर्यसमाज बाड़मेर** के प्रधान जी से मिले। आपकी अवस्था अधिक होने पर व शारीरिक रूप से अस्वस्थ होने पर भी आपमें अपने कार्यों को लेकर काफी उत्साह देखा, जो हमारे लिए काफी प्रेरणास्पद था। बाड़मेर से मध्याह्न में चलकर रात्रि में **पाली, राज.** पहुँचे। वहाँ डॉ. महेश जी आर्यवीर के यहाँ रात्रि विश्राम किया। आप आर्यसमाज के एक कर्मठ कार्यकर्त्ता है। आप राजकीय चिकित्सालय में चिकित्सक के रूप में कार्यरत है ही, लेकिन साथ ही साथ आर्यवीर दल पाली के सजग प्रहरी भी हैं। आपकी शाखा में प्रतिदिन प्रात: सायं दोनों समय ४०-५० आर्यवीर आते हैं जिसमें ८ वर्ष के छात्र से लेकर ४५-५० वर्ष तक के, सभी अवस्था के आर्यवीर होते हैं। इसके अतिरिक्त आप गुरुकुल पाली के संचालन में भी सहयोग प्रदान करते हैं। इस प्रकार पाली से पुन: वापस अजमेर पहुँचकर यह यात्रा सम्पन्न हुई।

(ख) अलवर (राज.) प्रचार यात्रा:- ९ सितम्बर २०१४ को **आचार्य कर्मवीर जी व आचार्य सत्यप्रिय जी** अपने प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत अजमेर से चलकर **संस्कार भारती स्नातकोत्तर महाविद्यालय बगरू** पहुँचे, वहाँ सुधीर जी आर्य से सम्पर्क किया। वहाँ से चलकर **आर्यसमाज कोटपुतली** पहुँचे, पूर्व सूचना होने के कारण ८-१० आर्यजन वहाँ उपस्थित मिले, आर्यसमाज की गतिविधियों पर चर्चा हुई।

सायं समय तहसील **आर्यसमाज (वैदिक आश्रम) बहरोड** पहुँचे। वहाँ कई आर्य सज्जन एकत्रित थे सायंकालीन यज्ञ किया तथा आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार पर चर्चा की। वहाँ से चलकर **गुरुकुल खानपुर** पहुँचे, रात्री शयन वही किया। १० सितम्बर २०१४ प्रात: यज्ञोपरान्त गुरुकुल के विद्यार्थियों के लिए सत्संग हुआ। वहाँ से चलकर **'गुवाणा', जटगांवड़ा** होते हुए **आर्यसमाज जखराणा** पहुँचे। यहाँ से चलकर **कोहराणा** में उच्च माध्यमिक विद्यालय पहुँचकर कक्षा दस के छात्र-छात्राओं के लिए उपदेश दिए।

सांयकाल को **आर्यसमाज बिजोरावास** में यज्ञ सत्संग हुआ। आगे ११ सितम्बर २०१४ को **आर्यसमाज गादोज** में भूपसिंह जी से मिलते हुए पास के ही **गाँव ढिंढ़ोर** पहुँचे जहाँ पर विद्यालय के बच्चों को जीवनोपयोगी बातें बताई।

यहाँ से **आर्यसमाज बीघाणा, चाँदी-चाणा** होते हुए फिर **आर्यसमाज रिवाली** पहुँचकर श्री महेश जी शास्त्री व अन्य कई आर्य महानुभावों से मिले।

आगे **आर्यसमाज गण्डाला** में श्री रोहताश जी आर्य से मिले, रात्री को फिर **आर्यसमाज बहरोड** में आकर विश्राम किया।

१२ सितम्बर २०१४ को प्रात: यज्ञ करके **कन्या गुरुकुल दाधिया** पहुँचे, वहाँ पर गुरुकुल देखा व भोजन करके **आर्यसमाज शहाजहांपुर** पहुँचे। वहाँ से **योगाश्रम लालपुर** होते हुए **गौशाला बूढ़ी बावल** पहुँचे, पश्चात् **आर्यसमाज नसोपुर** गये, एक वृद्ध संन्यासी आयु लगभग ९५ वर्ष कमर बिल्कुल झुक चुकी परन्तु दोनों समय यज्ञ करते हैं, से मिले।

यहाँ से **आर्यसमाज ईशरोदा** पहुँचे, आर्यसमाज में अनेक सारे युवक-बच्चे व आर्यसमाजी लोग इकट्ठे हुए, मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

यहाँ से चलकर रात्रि में **आर्यसमाज तिजारा** पहुँचे फिर वहाँ से **आर्यसमाज किशनगढ़ बास** होते हुए **आर्यसमाज बास कृपाल नगर** पहुँचे, यहाँ आर्यसमाज का भवन विशाल व पुराना है फिर **आर्यसमाज खैरथल** पहुँच कर वहाँ मन्त्री/प्रधान से मिले, यहाँ से आगे चलकर **आर्यसमाज हरसौली** में मन्त्री/प्रधान से मिले। पुन: **आर्यसमाज चिकानी** होते हुए पश्चात् रात्रि में **आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग अलवर** पहुँचे, वही पर भोजन व रात्री विश्राम किया।

१४ सितम्बर २०१४ को **आर्यसमाज अलवर** में प्रात: रविवारीय सत्संग में भाग लिये, लोगों को सभा की गतिविधि से परिचित कराया। यहाँ से **आर्यसमाज राजगढ़, अलवर** पहुँचे, कई सारे आर्य सज्जन आर्यसमाज में पहले से उपस्थित थे, वहाँ पर समाज की गतिविधि की जानकारी प्राप्त कर, यहाँ से चलकर सायं ७ बजे ऋषि उद्यान पहुँचे।

(ङ) आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम-

(क) ६ सितम्बर २०१४ - आर्यसमाज बीकानेर, गंगायचा, रेवाड़ी, हरियाणा के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान प्रदान किया।

(ख) ७ सितम्बर २०१४- हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा, रोहतक के मासिक सत्संग में व्याख्यान दिया।

(ग) ८-१० सितम्बर २०१४- आर्यसमाज कीर्तिनगर, दिल्ली में व्याख्यान दिया।

(घ) ११ सितम्बर २०१४- ऋषि निन्दक कबीरपन्थी रामपाल दास के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपनी प्राणाहुति देने वाले करौंथा के शहीद सन्दीप आर्य की स्मृति में निर्मित द्वार के लोकार्पण समारोह में श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

(ङ) ११-१२ सितम्बर २०१४- प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, सहारनपुर, उ.प्र. के वार्षिक कार्यक्रम में आर्य-सिद्धान्तों पर व्याख्या।

(य) १७-२१ सितम्बर २०१४- आर्यसमाज अबोहर, पंजाब में योग शिविर सम्पन्न करवाया तथा डी.ए.वी. बी-एड कॉलेज, महर्षि दयानन्द बी-एड कॉलेज, डी.ए.वी. विद्यालय, गोपीचन्द महिला कॉलेज, डी.ए.वी. हरीपुर, महात्मा गाँधी डी.ए.वी. स्कूल, आर.एस.एस. के बाल संस्कार केन्द्र आदि में विद्यार्थियों को नियमित मार्गदर्शन भी प्रदान करते रहे। २० सितम्बर को श्री मेहरचन्द जी आर्य के गाँव बजीरपुर में धर्म चर्चा की। इस पूरे कार्यक्रम में आपके साथ आचार्य कर्मवीर जी भी अपना मार्गदर्शन प्रदान करते रहें।

(छ) २३-२८ सितम्बर २०१४- आर्यसमाज उदयपुर के उत्सव में मार्गदर्शन प्रदान किया। इति।।

आर्यजगत् के समाचार

१. योग साधक सम्मानित- १४ सितम्बर २०१४ को जयपुर, राजस्थान स्वास्थ्य-योग परिषद् की ओर से ४१वाँ वार्षिक समारोह सम्पन्न हुआ। योग साधना केन्द्रों के श्रेष्ठ साधकों-साधिकाओं और योग-परिवारों को राज्य के समाज कल्याण मन्त्री अरुण चतुर्वेदी ने सम्मानित किया। डॉ. राजेन्द्र छाबड़ा ने सभी का स्वागत किया तथा सचिव हरिचरण सिंहान ने परिषद् की गतिविधियों से परिचित कराया।

२. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज कुल्हाड़ी कोटा, राजस्थान का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक ८ से १० सितम्बर २०१४ को पूर्णाहुति के पश्चात् सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज कुन्हाड़ी के संरक्षक डी.पी. मिश्रा ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए बताया कि वार्षिकोत्सव का शुभारम्भ देवयज्ञ से हुआ। यज्ञ में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ आहुति प्रदान की। तत्पश्चात् बिजनौर से आए आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. दिनेशदत्त आर्य ने भजनों के माध्यम से यज्ञ की महिमा का वर्णन किया।

३. शिविर सम्पन्न- आर्यसमाज हिरण मगरी उदयपुर, राजस्थान के तत्त्वावधान में आचार्य सानन्द जी के सान्निध्य में दिनांक १९ से २१ सितम्बर २०१४ तक त्रिदिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पचास शिविरार्थियों ने भाग लिया।

४. यज्ञ सम्पन्न- आर्यसमाज सम्भाजीनगर, औरंगाबाद, महाराष्ट्र में दि. १३ से १७ अगस्त २०१४ तक भारत समृद्धि के लिये पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ का आयोजन खड़केश्वर महादेव मन्दिर के प्रांगण में भारत नगर के महर्षि दयानन्द यज्ञशाला में डॉ. नन्दिता जी शास्त्री चतुर्वेदाचार्या प्रधानाचार्या पाणिनि कन्या महाविद्यालय के ब्रह्मत्व में डॉ. कमलनारायण जी आर्य रायपूर के पौरोहित्य में तथा गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के मन्त्र पाठ से प्रारम्भ हुआ। इन ५ दिनों में १०८ यजमानों ने यजमान पद पर रहकर १११ प्रकार की औषधियों तथा शुद्ध गाय के घी से आहुतियाँ प्रदान की।

चुनाव समाचार

५. आर्य समाज पंचवटी, मालेगाँव स्टैण्ड, पंचवटी, नाशिक, महा. के चुनाव में **प्रधान**- श्री गुलशन कुमार चड्ढा, **मन्त्री**- श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्रीमती सरिता नारंग को चुना गया।

शोक समाचार

६. आचार्य राजवीर शास्त्री दिवंगत- आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली के अध्यक्ष व मासिक 'दयानन्द सन्देश' के अवैतनिक एवं यशस्वी सम्पादक का देहान्त दिनांक २५ सितम्बर २०१४ ई. को हो गया। वे कुछ वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनके देहान्त का समाचार पाकर आर्यजगत् शोक में डूब गया।

वैदिक शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान् आचार्यवर राजवीर शास्त्री जी का जन्म सन् १९३९ में फज़लगढ़, जिला गाजियाबाद में श्री शिवचरणदास जी के घर में हुआ था। गुरुकुल, झज्जर में आपने अध्ययन किया था तथा कुछ समय वहाँ अध्यापन कार्य भी किया तत्पश्चात् मेरठ विश्वविद्यालय से एम.ए. संस्कृत व वाराणसी से प्राचीन व्याकरण की परीक्षा उत्तीर्ण करके आचार्य बने। लाला दीपचन्द जी आर्य द्वारा स्थापित आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में सेवारत रहते हुए अनेक ग्रन्थों का लेखन, संशोधन, अनुसन्धान व सम्पादन आदि सुकार्य कुशलतापूर्वक करते रहे।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज़, मुम्बई एवं परोपकारिणी सभा, अजमेर तथा कुछ अन्य वैदिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया। पूज्य आचार्य जी अत्यन्त विनम्र, सत्याग्रही, सत्यान्वेषी एवं वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ थे।

७. श्री विजयसिंह गायकवाड़ दिवंगत- आर्यसमाज गोरखपुर जबलपुर, मध्यप्रदेश के जाने माने वरिष्ठ सक्रिय कार्यकर्ता एवमं भारतीय स्टेट बैंक से शाखा प्रबन्धक पद से सेवाननिवृत्त श्री विजयसिंह गायकवाड़ का दि. २१/९/२०१४ को ७३ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे एक अरसे से आर्यसमाज गोरखपुर जबलपुर के कोषाध्यक्ष थे और आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ के उपमन्त्री रह चुके। आपने एक आदर्श एवं अनुकरणीय कार्यकर्त्ता के रूप में कार्य किया। श्री विजयसिंह गायकवाड़ अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। इस अवसर पर अनेक गणमान्य लोगों ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्मरण करते हुए श्रद्धाञ्जलि अर्पित की और शोकाकुल परिवार को सान्त्वना प्रदान की।

परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जली।

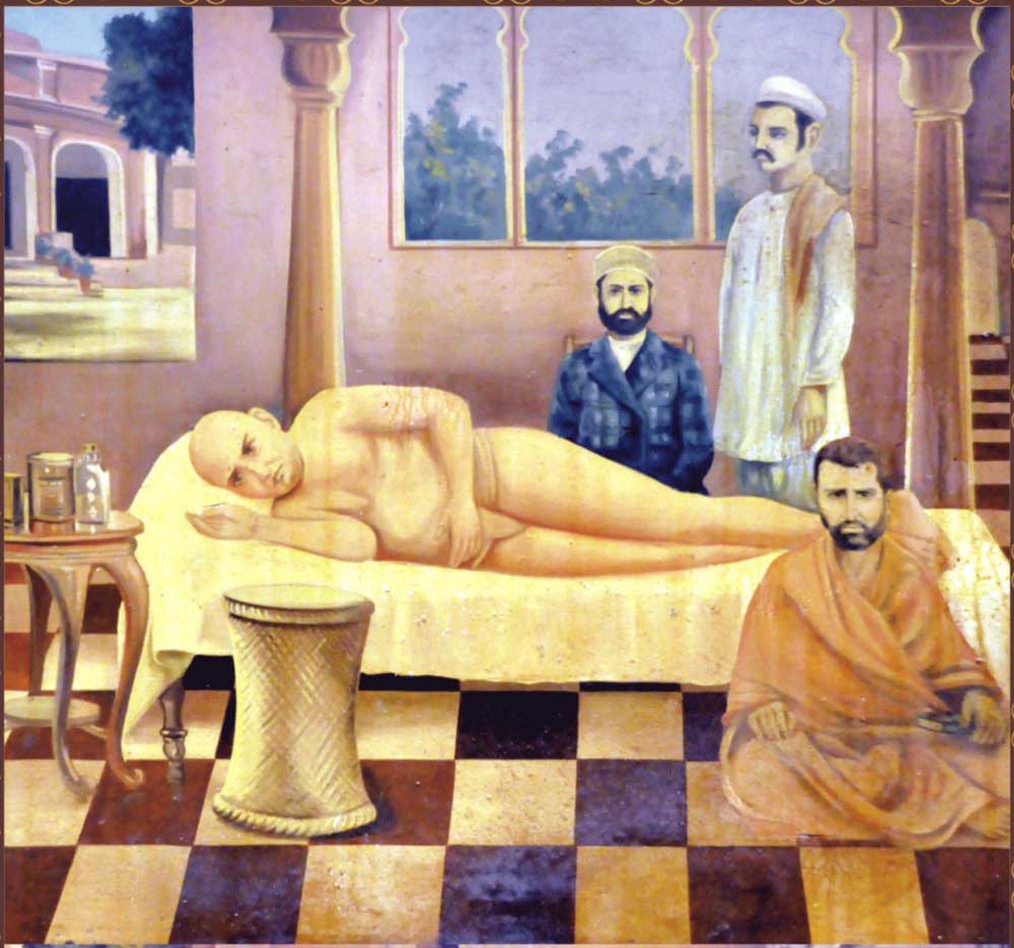

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : १५ अक्टूबर, २०१४ ३९५९/५९

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में

१३१ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ३१ अक्टूबर, १ व २ नवम्बर २०१४

सभी आर्यजनों को सादर आमन्त्रण है।

विशेष आकर्षण : ऋग्वेद पारायण यज्ञ, वेदगोष्ठी, चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता, विद्वानों का सम्मान, ब्रह्मचारियों द्वारा लघु नाटिका

ऋषि मेला

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द को हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें और महर्षि के स्वप्न को साकार करें।

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट

Design@ MITTAL 9829797513